04 - पर्यावरणीय समस्याओं का हल समाज के पास

05 - सदानीरा के साथ छोटी नदियां भी बचाएं

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 05 जून, 2026

06 - समान नागरिक संहिता के अध्ययन एवं परीक्षण के लिए गठित उच्च...

07 - सभी नगरीय निकायों में वर्षा पूर्व नालों की सफाई

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 243, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

मेरी पृथ्वी
कभी उदास नहीं होती
गीत गाती रहती है

मेरी पृथ्वी
हर प्राण को
रसाविल करती रहती है

मेरी पृथ्वी
अपनी माटी की सुगंध से
हर जीवन को
सुगंधित करती रहती है

मेरी पृथ्वी
हर देह को
नये नये रूप देती रहती है

मेरी पृथ्वी
हर कष्ट को झेलकर भी
कभी क्रुद्ध नहीं होती

मेरी पृथ्वी
देवी-रूपा है ।

-दुर्गाप्रसाद झाला

प्रसंगवश

बड़ा खुलासा: वायुमंडलीय धूल बदल रही है पृथ्वी की जलवायु

दयानिधि

अंतरिक्ष से मिली नई जानकारी ने खोला रहस्यः वैज्ञानिकों ने वातावरण में मौजूद खनिज धूल की संरचना और उसके जलवायु पर पड़ने वाले प्रभाव को पहले से कहीं अधिक सटीकता से समझा। इसे सारांश में समझें तो 1. नासा के एमिट मिशन ने दुनिया के प्रमुख रेगिस्तानी क्षेत्रों की खनिज संरचना का उच्च-रिजॉल्यूशन नक्शा तैयार किया। 2. नई शोध से धूल में मौजूद आयरन ऑक्साइड की मात्रा संबंधी जलवायु मॉडल की अनिश्चितता छह गुना घटी।3. वैज्ञानिकों ने पाया कि सहारा क्षेत्र की धूल अधिक सूर्य ऊर्जा अवशोषित कर वातावरण को गर्म कर सकती। 4. अध्ययन के अनुसार एशिया के कुछ क्षेत्रों की धूल अधिक परावर्तक है, जिससे ठंडक का प्रभाव बढ़ता।5. शोध के बाद वैज्ञानिक अब धूल के परिवहन, कण आकार और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर ध्यान देंगे।

पृथ्वी के वातावरण में मौजूद खनिज धूल (मिनरल डस्ट) लंबे समय से वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य बनी हुई थी। यह धूल मुख्य रूप से सहारा रेगिस्तान, मध्य पूर्व और पूर्वी एशिया जैसे शुष्क क्षेत्रों से उड़कर वातावरण में पहुंचती है। अब वैज्ञानिकों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने इस धूल के बारे में नई और महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की है, जिससे जलवायु परिवर्तन को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी।

यह शोध अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में किया गया है। इसके नतीजे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिका 'नेचर जियोसाइंस' में प्रकाशित हुए हैं।

जलवायु पर धूल का असरः वातावरण में मौजूद धूल पृथ्वी के तापमान को प्रभावित करती है। कुछ परिस्थितियों में यह सूर्य की रोशनी को वापस अंतरिक्ष में भेजकर पृथ्वी को ठंडा करती है। वहीं कुछ स्थितियों में यह सूर्य की ऊर्जा को अपने अंदर सोख लेती है और वातावरण को गर्म बनाती है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, धूल का यह प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उसमें कौन-कौन से खनिज मौजूद हैं। विशेष रूप से लोहे से भरपूर खनिज, जिन्हें आयरन ऑक्साइड कहा जाता है, सूर्य की रोशनी को अधिक मात्रा में अवशोषित करते हैं। यही कारण है कि इन खनिजों की सही मात्रा जानना बेहद जरूरी था।

नासा के एमिट मिशन की बड़ी भूमिकाः इस शोध में नासा के एमिट मिशन से हासिल किए गए आंकड़ों का उपयोग किया गया। यह उपकरण अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर लगाया गया है। एमिट अत्याधुनिक तकनीक की मदद से पृथ्वी के शुष्क इलाकों की सतह पर मौजूद खनिजों का बहुत बारीकी से अध्ययन करता है।

इस उपकरण की खास बात यह है कि यह लगभग 60 मीटर के उच्च रिजॉल्यूशन पर जमीन की संरचना की जानकारी दे सकता है। इससे वैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिली कि किन क्षेत्रों की मिट्टी में कौन से खनिज मौजूद हैं और हवा में उड़ने वाली धूल की संरचना कैसी होगी। पहली बार वैज्ञानिकों को दुनिया के अधिकांश प्रमुख रेगिस्तानी क्षेत्रों के खनिजों का लगभग वैश्विक स्तर का नक्शा प्राप्त हुआ है।

अनिश्चितता में भारी कमीः इससे पहले वैज्ञानिकों को यह पता नहीं था कि वातावरण में मौजूद धूल में आयरन ऑक्साइड की मात्रा कितनी है। यही जलवायु मॉडल तैयार करने में सबसे बड़ी चुनौती थी। नए शोध के अनुसार, आयरन ऑक्साइड से जुड़ी अनिश्चितता में छह गुना से अधिक की कमी आई है। पहले यह अनिश्चितता 0.62 वाट प्रति वर्ग मीटर थी, जो अब घटकर केवल 0.1 वाट प्रति वर्ग मीटर रह गई है। इसका मतलब है कि अब वैज्ञानिक अधिक भरोसे के साथ यह बता सकते हैं कि धूल पृथ्वी को गर्म कर रही है या ठंडा।

सहारा रेगिस्तान से मिले अहम संकेतःशोध में सबसे अधिक सुधार सहारा रेगिस्तान से संबंधित आंकड़ों में देखा गया। सहारा दुनिया में वातावरणीय धूल का सबसे बड़ा स्रोत माना जाता है। नई जानकारी की मदद से वैज्ञानिकों ने सहारा क्षेत्र में धूल के प्रभाव से जुड़ी मॉडलिंग की त्रुटियों को लगभग 80 प्रतिशत तक कम कर दिया। इससे उपग्रहों द्वारा प्राप्त वास्तविक आंकड़ों और कंप्यूटर मॉडलों के बीच बेहतर तालमेल स्थापित हुआ।

अध्ययन में यह भी सामने आया कि उत्तरी अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों की धूल में लोहे वाले खनिज अधिक हैं, जिससे वहां की धूल वातावरण को अपेक्षाकृत अधिक गर्म कर सकती है। दूसरी ओर, एशिया के कुछ क्षेत्रों की धूल अधिक परावर्तक है और ठंडक पैदा करने में मदद करती है।

अब शोध का नया केंद्रः वैज्ञानिकों का कहना है कि इस अध्ययन ने धूल की संरचना से जुड़ी बड़ी समस्या को काफी हद तक हल कर दिया है। अब शोधकर्ताओं का ध्यान इस बात पर अधिक होगा कि धूल वातावरण में कैसे फैलती है, कितनी दूर तक जाती है और समय के साथ उसमें क्या बदलाव आते हैं। साथ ही, भविष्य में यह भी अध्ययन किया जाएगा कि जलवायु परिवर्तन का धूल के स्रोतों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

भविष्य के लिए महत्वपूर्ण कदमः विशेषज्ञों का मानना है कि यह शोध केवल धूल और तापमान के संबंध को समझने तक सीमित नहीं है। इससे महासागरों में पोषक तत्वों की आपूर्ति, बर्फ की सतह पर धूल के प्रभाव और बादलों के निर्माण जैसी प्रक्रियाओं को भी बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा। जलवायु परिवर्तन के दौर में पृथ्वी की ऊर्जा व्यवस्था को सही ढंग से समझना बेहद जरूरी है। ऐसे में यह नई खोज वैज्ञानिकों को अधिक सटीक जलवायु अनुमान लगाने में मदद करेगी और भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए मजबूत आधार प्रदान करेगी।

('डाउन टू अर्थ' हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

झूमकर आया 'मॉनसून'

- केरल से एंट्री, तीन दिन लेट, सात दिन जमकर बारिश का अनुमान
- एमपी और राजस्थान समेत 24 राज्यों में आंधी-बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून केरलम पहुंच गया है। अगले 2-3 दिन यह गोवा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु को कवर कर सकता है। वहीं, बंगाल की खाड़ी के कुछ और हिस्सों के अलावा पूर्वोत्तर के राज्यों में आगे बढ़ सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक, केरलम, तमिलनाडु और कर्नाटक में अगले 7 दिन में कुछ जगह भारी बारिश हो सकती है। मध्य प्रदेश, राजस्थान समेत कई राज्यों में प्री मानसून एक्टिविटी के असर से आंधी-बारिश देखने मिल सकती है। इस बार मानसून 3 दिन लेट है। आमतौर पर यह 1 जून को केरलम पहुंचता है। इसके बाद डेढ़ महीने में पूरे देश को कवर कर लेता है। 17 सितंबर के आसपास राजस्थान के रास्ते वापसी शुरू करता है और 15 अक्टूबर तक पूरा हो जाता है। **13 साल में 7वीं बार लेट हुआ मानसून-** मानसून की लेट-लतीफी पिछले कई सालों से जारी है। पिछले 13 साल में यह 7वीं बार है जब मानसून लेट हुआ है। आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक बीते 150 साल में मानसून के केरल पहुंचने की तारीखें अलग-अलग रही हैं। 1918 में मानसून सबसे पहले 11 मई को केरलम पहुंच गया था, जबकि 1972 में सबसे देरी से 18 जून को केरलम पहुंचा था।

24 राज्यों में अलर्ट, केरलम में 11-20 सेमी तक बारिश की संभावना

मौसम विभाग ने ओडिशा, राजस्थान, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और तेलंगाना समेत 24 राज्यों में बारिश, आंधी और तेज हवाओं की संभावना जताई है। वहीं राजस्थान, हिमाचल और उत्तराखंड में भारी बारिश, ओले गिरने और तेज हवाओं को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। दिल्ली में भी दो दिन के लिए यलो अलर्ट है। क्यूम्युलोनिम्बस क्लाउड्स यहां 50 से 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी-बारिश करवा सकते हैं। क्यूम्युलोनिम्बस क्लाउड या क्लाउड (बादल) मौसम के पावरहाउस माने जाते हैं। तेज आंधी, बिजली और गरज वाले तूफान इन्हीं बादलों के कारण बनते हैं। कल से केरलम के अलग-अलग हिस्सों में भारी बारिश हो रही है, जिसके चलते आईएमडी ने अलप्पुझा, कोट्टायम और एर्नाकुलम जिलों के लिए 3 घंटे का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। ऑरेंज अलर्ट का मतलब है 11सेमी से 20 सेमी तक की बहुत भारी बारिश हो सकती है। देश के कई राज्यों में अभी भी गर्मी कम नहीं हुई है।

मुख्यमंत्री विश्व पर्यावरण दिवस पर करेंगे 'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' अभियान का शुभारंभ

'इंस्पायर्ड बाय नेचर, फॉर क्लाइमेट एंड फॉर अवर फ्यूचर' थीम पर केंद्रित होंगे आयोजन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव विश्व पर्यावरण दिवस पर कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार, भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में 'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' अभियान का प्रातः 11 बजे शुभारंभ करेंगे। कार्यक्रम में 8 श्रेणियों में 11 राज्य स्तरीय पर्यावरण पुरस्कार प्रदान किये जाएंगे। उक्त पुरस्कार पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और सतत विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली औद्योगिक इकाइयों, शैक्षणिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों तथा व्यक्तियों को वर्ष 2024-25 के लिए दिये जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सर्कुलर इकॉनॉमी विषय से संबंधित 5 कोर्स मॉड्यूल्स और एप्को एवं इन्टैक द्वारा मध्यप्रदेश में

संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत 16 जिलों की 500 बावड़ियों के प्रलेखन दस्तावेजों का विमोचन करेंगे। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण से जुड़े नवाचारों, सर्कुलर इकॉनॉमी तथा जल संरक्षण के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों का भी प्रदर्शन और प्रस्तुतिकरण किया जाएगा। आयोजन में वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री दिलीप अहिरवार और अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल भी शामिल होंगे।

'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' अभियान के अंतर्गत नागरिकों, शैक्षणिक संस्थाओं, उद्योगों, स्व-सहायता समूहों, नगरीय निकायों, पंचायतों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों को पौधारोपण के लिए प्रेरित किया जाएगा। रोपे गए पौधों का जियो-टैगिंग कर उनका पंजीयन Meri LiFE पोर्टल पर किया जाएगा।

- दिल्ली अग्निकांड

होटल मालिक 4 दिन की पुलिस रिमांड पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मालवीय नगर स्थित फ्लरिश होटल में लगी आग मामले में मालिक लवकेश बजाज को 4 दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा गया है। बजाज को पुलिस ने दिल्ली कोर्ट में पेश किया था। वहीं, बजाज ने पूछताछ में चौंकाने वाला खुलासा किया है। पुलिस के अनुसार, आग लगने के दौरान बजाज अपनी कार से जलती हुई इमारत के पास से गुजरा, लेकिन लोगों की मदद करने के बजाय वहां से निकल गया। उसने बताया कि वह डर के कारण मौके से भाग गया था। उसने यह भी स्वीकार किया कि उसने न तो किसी की मदद की और न ही घर गया। इसके बजाय वह शहर में इधर-उधर घूमता रहा। बुधवार को लगी इस भीषण आग ने पांच मंजिला इमारत को अपनी चपेट में ले लिया था, जिसमें 21 लोगों की मौत हो गई।

आग फैली तो लोगों को निकलने का मौका नहीं मिला

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया, आग सुबह 8:30 बजे लगी। कुछ मिनट में धुआं पूरी इमारत में फैल गया। ऊपरी मंजिलों पर ठहरे लोगों को निकलने का मौका नहीं मिला। फायर सर्विस, पुलिस और स्थानीय लोगों ने 58 लोगों को बाहर निकाला। इनमें 35 घायल हैं। इस दौरान 10 पुलिसकर्मी भी घायल हुए। मैक्स अस्पताल ने बताया, 39 लोगों को लाया गया था, जिसमें 18 की अस्पताल आने से पहले मौत हो चुकी थी। 15 आईसीयू में भर्ती हैं और इनमें 8 वेंटिलेटर पर हैं। मृतकों में 11 विदेशी और 10 भारतीय हैं। विदेशियों में 9 अफ्रीकी देशों और 2 तुर्कमेनिस्तान के नागरिक हैं। शवों की पहचान के लिए डीएनए टेस्ट होगा। पुलिस ने होटल मालिक लवकेश बजाज को गिरफ्तार कर लिया है।

राज्यसभा चुनाव के लिए बीजेपी ने घोषित किए उम्मीदवार

मप्र से रजनीश अग्रवाल , तरुण चुघ को मिला टिकट

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में राज्यसभा चुनाव के लिए बीजेपी ने दो उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी है। बीजेपी ने तरुण चुघ और रजनीश अग्रवाल को उम्मीदवार बनाया है। अटकलें लगाई जा रही थीं कि बीजेपी पार्टी के किसी सीनियर नेता को अपना कैंडिडेट्स घोषित कर सकती है, लेकिन बीजेपी ने एक बार फिर से चौंकाते हुए रजनीश अग्रवाल जैसे कार्यकर्ता को मौका दिया है।

मध्य प्रदेश की तीन सीटों पर होंगे चुनाव- मध्य प्रदेश में राज्यसभा की तीन सीटों पर चुनाव होने हैं। इसके लिए 18 जून को वोटिंग होगी। बीजेपी के कब्जे में

दो सीटें हैं। जबकि एक सीट पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह की खाली हुई है। कांग्रेस ने अभी उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है।

कौन हैं रजनीश अग्रवाल- बीजेपी ने रजनीश अग्रवाल को उम्मीदवार घोषित किया है। वह मध्य प्रदेश भाजपा के प्रदेश सचिव हैं। संगठन में बूथ प्रबंधन और चुनावी रणनीति के विशेषज्ञ माने जाते हैं। वह लंबे समय से भाजपा संगठन में सक्रिय हैं और प्रदेश स्तर पर कई जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं। पर्दे के पीछे काम करने वाले संगठनात्मक नेताओं में गिने जाते हैं।

दिग्विजय सिंह की सीट भी खाली हो रही है- मध्य प्रदेश में राज्यसभा की तीन सीटें खाली हो रही हैं। इसमें भाजपा की दो सीटें और कांग्रेस की एक सीट खाली हो रही है। कांग्रेस से अभी दिग्विजय सिंह राज्यसभा सांसद थे। पार्टी जल्द ही इस सीट के लिए प्रत्याशी घोषित करेगी। इसको लेकर दिल्ली में मंथन चल रहा है।

राजस्थान से दो प्रत्याशी घोषित

राजस्थान से भाजपा ने डॉ. अलका गुर्जर और डॉ. सतीश पूनिया को राज्यसभा चुनाव के लिए उम्मीदवार बनाया है। सतीश पूनिया का नाम घोषित होने के बाद राजस्थान की राजनीति में इसे महत्वपूर्ण फैसला माना जा रहा है।

अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर से भी उम्मीदवार तय

अरुणाचल प्रदेश से भाजपा ने ताई तागाक को उम्मीदवार घोषित किया है। वहीं मणिपुर से ए. शारदा देवी को राज्यसभा चुनाव के लिए टिकट दिया गया है।

ओडिशा उपचुनाव के लिए देवाशीष सामंतराय पर दांव

राज्यसभा उपचुनाव 2026 के लिए भाजपा ने ओडिशा से देवाशीष सामंतराय को उम्मीदवार बनाया है। पार्टी ने उपचुनाव के लिए भी अपनी आधिकारिक स्वीकृति मिल गई है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 05 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

टीसीएस के बाद अब विप्रो में धर्मांतरण का आरोप

● पीड़िता बोली-कर्मचारी ने इस्लाम अपनाने का दबाव बनाया

पुणे (एजेंसी)। पुणे की एक महिला ने विप्रो टेक्नोलॉजीज कंपनी पर धार्मिक उत्पीड़न, कार्यस्थल पर भेदभाव और जबरन इस्तीफा दिलाने के आरोप लगाए हैं। महिला पहले इस कंपनी में काम करती थी। ये आरोप पुणे में हिंदू

● ऑफिस में इस्लाम अपनाने का दबाव दिया जाता था- पीड़ित महिला ने आरोप लगाया कि उसकी एक महिला सहकर्मी कई बार उस पर इस्लाम अपनाने और एक मुस्लिम पुरुष के साथ संबंध बनाने का दबाव डालती थी। उसका कहना है कि सहकर्मी बार-बार उसकी निजी जिंदगी में दखल देती थी और उसे हिंदू धर्म छोड़ने के लिए कहती थी।

जनजागृति समिति द्वारा आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान लगाए गए। इस दौरान पूर्व कर्मचारी ने उन घटनाओं के बारे में बताया, जो उसके साथ उस समय हुई थीं जब वह हिंजवडी ऑफिस में काम करती थी। इसके बाद पुणे के हिंजवडी पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई गई है। पूर्व कर्मचारी के वकील ने बताया कि कंपनी को कानूनी नोटिस भी भेजा गया है। उन्होंने 50 लाख रुपये मुआवजे की मांग की है। पीड़ित महिला ने कहा- अगस्त 2025 में यह हुआ।

बंगाल में ममता के सामने अब पहचान का संकट!

● सबसे मुश्किल दौर में पार्टी, बागी गुट ने किया खेल

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में टीएमसी विधायक दल में टूट के बाद भी राजनीतिक उठापटक बाकी है। टीएमसी के बागी 60 विधायकों को विधानसभा में विपक्षी दल की मान्यता मिल गई है। विधानसभा अध्यक्ष रतींद्रनाथ बोस

● बंगाल में महाराष्ट्र पार्ट-2 दोहराया जा रहा है- बंगाल विधानसभा में टीएमसी में टूट के बाद ममता बनर्जी और पार्टी का भविष्य स्पीकर रतींद्रनाथ बोस के फैसलों पर टिक गया है। संजय राउत समेत कई विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया है कि पश्चिम बंगाल में महाराष्ट्र के ऑपरेशन लोटस को दोहराया जा रहा है। विधानसभा में ऋतब्रत बनर्जी को नेता प्रतिपक्ष का पद देने पर भी टीएमसी के नेताओं ने सवाल उठाए हैं। कुणाल ने कहा है कि पार्टी से निकाले गए नेता को नेता कैसे बना सकते हैं।

ने ऋतब्रत बनर्जी को नेता प्रतिपक्ष का दर्जा देते हुए ऑफिस की चाबी भी दे दी। टीएमसी पार्टी की ओर से नियुक्त शोभनदेव भट्टाचार्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के ऑफिस के लिए धरना दे रहे थे। पार्टी में टूट के बाद मायूसी ही उनके हाथ लगी। अब असली तृणमूल और नकली टीएमसी की लड़ाई शुरू होगी, जिस पर आखिरी फैसला विधानसभा अध्यक्ष को ही करना है।

● नेवी में शामिल होंगे 4 स्वदेशी युद्धपोत और एक सर्वे शिप

समुद्र में बढ़ेगी भारत की और ज्यादा ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना इस महीने अपने बेड़े में पांच स्वदेशी हथियार को शामिल करने की तैयारी कर रही है। इनमें दो प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ फ्रिगेट, सर्वेक्षण पोत और दो पनडुब्बी रोधी युद्धक विमान शामिल हैं। मेड इन इंडिया के तहत बने ये जहाज समुद्री सुरक्षा, युद्ध तत्परता और तटीय रक्षा

को काफी मजबूत करेंगे। ये इंडक्शन परिशोधित नौसैनिक ताकत को देश के भीतर ही डिजाइन और निर्माण करने की भारत की बढ़ती क्षमता को दर्शाते हैं।

हिंद महासागर में चीन को टक्कर

भारतीय नौसेना वर्तमान में लगभग 130 से 140 जहाजों का संचालन करती है और हर 40 दिनों में अपने रोस्टर में स्वदेशी युद्धपोतों या पनडुब्बियों को जोड़ रही है। यह प्रस्तावित बेड़ा विस्तार 2035 तक 200 युद्धपोतों और पनडुब्बियों के साथ एक मजबूत नौसेना बनाने के सरकार के विजन का हिस्सा है। ये नए जहाज नौसेना को चीनी नौसेना की बढ़ती उपस्थिति के खिलाफ हिंद महासागर क्षेत्र में अपना दबदबा स्थापित करने और अपने समुद्री पदचिह्न को बढ़ाने में मदद करेंगे।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ेगी क्षमता

आईएनएस दूनागिरी जीआरएसई द्वारा निर्मित प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ फ्रिगेट है। यह युद्धपोत आधुनिक सेंसर, परिष्कृत हथियार प्रणालियों और नेटवर्क-केंद्रित युद्ध सुविधाओं से लैस है। आईएनएस महेंद्रगिरि भी इसी श्रेणी का दूसरा प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ फ्रिगेट है। दोनों युद्धपोत स्वदेशी युद्धपोतों की एक नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनका उद्देश्य भारत की समुद्री शक्ति को बढ़ाना, युद्धक पहुंच बढ़ाना और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ब्लू-वाटर क्षमताओं का विस्तार करना है। ये दोनों ही पोत सुपरसोनिक ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल, बराक-8 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली, शुरुआती खतरे का पता लगाने और ट्रैकिंग के लिए शक्तिशाली एमएफ-स्टार एईएसए रडार, और आधुनिक टॉरपीडो ट्यूब एवं रॉकेट लॉन्चरों से लैस होंगे। सर्वेक्षण पोत (लार्ज) संशोधक को उन्नत हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण और समुद्र तल की मैपिंग संचालन के लिए डिजाइन किया है।

अभेद्य हुआ 'सुदर्शन चक्र' आ गई एस-400 की चौथी खेप

● रूस ने बढ़ा दी भारत की और ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की हवाई रक्षा ताकत और भी अभेद्य हो गई है। रूस से भारत को अत्याधुनिक एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम की चौथी स्क्वाड्रन मिल गई है। इस सिस्टम को भारत में सुदर्शन चक्र कहा जाता है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के चलते इस सिस्टम की डिलीवरी में कुछ देरी हुई थी, लेकिन अब

समुद्री रास्ते से यह भारत आ चुका है और जल्द ही इसे एक अहम ऑपरेशनल इलाके में तैनात कर दिया जाएगा।

ऑपरेशन सिंदूर और रिकॉर्ड-रेंज किल- एस-400 सुदर्शन की अहमियत ऑपरेशन सिंदूर से समझी जा सकती है। रक्षा सूत्रों के मुताबिक, इस ऑपरेशन में एस-400 ने पाकिस्तानी वायुसेना के खिलाफ एक अहम रोल निभाया था।

● पांचवीं और आखिरी स्क्वाड्रन का भी है इंतजार- भारत ने अपनी पश्चिमी और उत्तरी सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए साल 2018 में रूस के साथ पांच एस-400 रेजीमेंटल सिस्टम के लिए सौदा किया था। इसकी पहली तीन स्क्वाड्रन भारत को पहले ही मिल चुकी हैं। अधिकारियों ने बताया कि यूक्रेन युद्ध के कारण जो रुकावटें आई थीं, वे अब दूर हो गई हैं और डिलीवरी फिर से तय समय पर होने लगी है। उम्मीद है कि पांचवीं और आखिरी स्क्वाड्रन भी आने वाले कुछ महीनों में भारत पहुंच जाएगी। इसके साथ ही, भारत अपने बेड़े का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त एस-400 खरीदेगा।

भोपाल में सिरफिरे आशिक का खौफनाक कदम

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के छोला मंदिर थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले शंकर नगर इलाके में मंगलवार

एक्स गर्लफ्रेंड को सरेराह रोककर उस पर चाकू से ताबड़तोड़ वार किए

की शाम एक बेहद सनसनीखेज वारदात सामने आई है। यहां एक युवक ने अपनी एक्स गर्लफ्रेंड को सरेराह रोककर उस पर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर दिए। आरोपी ने युवती को संभलने तक का मौका नहीं दिया और उसके चेहरे, गर्दन, पीठ और हाथों पर एक के बाद एक कई वार किए। घटना के बाद से ही पूरे इलाके में भारी दहशत का माहौल है। जब बीच सड़क पर चीख-पुकार मची, तो पीड़िता की सगी बहन उसे बचाने के लिए दौड़कर मौके पर पहुंची। सिर पर सवार खून के चलते बेखौफ आरोपी ने उस पर भी हमला कर दिया और चाकू मारकर उसका गाल चीर दिया।

बड़ा झटका! बीजेपी से अलग होंगे अन्नामलाई

जल्द कर सकते हैं ऐलान, तमिलनाडु में इस्तीफों का दौर शुरू

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु में भारतीय जनता पार्टी को झटका लगा है। पार्टी के पूर्व अध्यक्ष के अन्नामलाई ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। सियासी गलियारों में हलचल इस बात को लेकर बढ़ गई है कि वह जल्द कोई बड़ी घोषणा कर सकते हैं। इस बात की जोरदार चर्चा है कि अन्नामलाई जल्द ही एक नई पार्टी या आंदोलन की घोषणा कर सकते हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि वह बीजेपी से अलग होकर अपनी एक स्वतंत्र राजनीतिक जमीन तैयार करने की योजना बना रहे हैं। आपको बता दें कि 2 जून को अन्नामलाई ने दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। इस बैठक के बाद कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया, लेकिन सूत्रों के मुताबिक बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व ने उन्हें फिलहाल अपना इस्तीफा रोकने के लिए कहा है। इससे पहले ऐसी खबरें आई थीं कि अन्नामलाई को राष्ट्रीय सचिव बनाया जा रहा है।

अधर में है अन्नामलाई का सियासी सफर?

पूर्व आईपीएस अधिकारी अन्नामलाई का राजनीतिक भविष्य उस समय से अधर में लटका हुआ नजर आ रहा है जब बीजेपी ने उन्हें हटाकर नैनार नागेंद्रन को तमिलनाडु का नया प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। इसके साथ ही बीजेपी ने साल 2026 के विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के साथ अपने पुराने गठबंधन को दोबारा जीवित कर लिया। पार्टी के इस फैसले के बाद से ही अन्नामलाई हाशिए पर चल रहे हैं। इन अटकलों को खुद अन्नामलाई के एक बयान ने और हवा दे दी है। हाल ही में उन्होंने मीडिया से कहा था कि वह अगले दो दिनों में अपनी स्थिति साफ करेंगे। दिल्ली रवाना होने से पहले उन्होंने कहा था, कृपया थोड़ा इंतजार करें। हम दो दिनों में एक साथ बैठेंगे और विस्तार से बात करेंगे।

प्रदेश में प्री-मानसून का असर, 29 जिलों में बारिश

बारिश के चलते पारा 5 डिग्री लुढ़का; 18.8 डिग्री टेंपरेचर के साथ पचमढ़ी सबसे ठंडा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून की दस्तक भले ही 20 जून के बाद होने की संभावना है, लेकिन उससे पहले प्री-मानसून गतिविधियां पूरे प्रदेश में सक्रिय हैं। 24 घंटे के दौरान 29 जिलों में आंधी, बारिश और कुछ स्थानों पर ओले गिरे। श्योपुर में सबसे अधिक करीब पौने 2 इंच बारिश हुई, जिससे कई इलाकों में जलभराव की स्थिति बन गई। राजधानी भोपाल में रातभर बारिश का दौर चला। गुरुवार सुबह भी कई क्षेत्रों में बूंदाबांदी हुई। मंडला में पौन इंच बारिश दर्ज की गई, जबकि भोपाल, नर्मदापुरम और राजगढ़ में करीब आधा इंच पानी गिरा। मौसम विभाग के अनुसार गुना, दमोह, सागर, उमरिया, मलाजखंड, रायसेन, सीहोर, शाजापुर, विदिशा और मैहर समेत कई जिलों में तेज हवाओं के साथ बारिश हुई। इसके अलावा बैतूल, हरदा, पन्ना, छतरपुर, निवाड़ी, रीवा, धार, बड़वानी, बुरहानपुर, मुरैना, अशोकनगर, जबलपुर, नरसिंहपुर और शहडोल में भी वर्षा दर्ज की गई। भोपाल में कुछ स्थानों पर ओले गिरने की भी सूचना है।

22 जिलों में आंधी और बारिश का अलर्ट- इधर मौसम विभाग ने भोपाल समेत 22 जिलों में आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है। विभाग के अनुसार इन जिलों में 40 किलोमीटर प्रतिघंटा या उससे अधिक रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं। अलर्ट वाले जिलों में श्योपुर, मुरैना, गुना, अशोकनगर, नीमच, मंदसौर, राजगढ़, भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, नरसिंहपुर, सागर, रीवा, सीधी, सिंगरौली, छतरपुर और दमोह शामिल हैं। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि पश्चिमी विक्षोभ और अन्य मौसमी प्रणालियों के सक्रिय रहने से अगले कुछ दिनों तक प्रदेश में प्री-मानसून गतिविधियां जारी रहेंगी।

भोपाल में 70किमी की रफ्तार से चली आंधी-बारिश, ओले गिरे,200 से ज्यादा जगह पेड़-टहनियां गिरीं, 300 बिजली फीडर पर असर

मध्य प्रदेश में प्री-मानसून गतिविधियां तेज हो गई हैं। राजधानी भोपाल में गुरुवार शाम करीब 70 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चली और तेज बारिश हुई। आंधी से शहर में 200 से अधिक स्थानों पर पेड़ और टहनियां गिर गईं, जिससे कई प्रमुख मार्गों पर यातायात प्रभावित हुआ। वहीं, बिजली व्यवस्था को भी बड़ा नुकसान पहुंचा है। करीब 300 बिजली फीडर पूर्ण या आंशिक रूप से प्रभावित हुए हैं, जिससे कई इलाकों में बिजली आपूर्ति बाधित हो गई। दूसरी ओर शाजापुर में ओलावृष्टि हुई, जबकि सीहोर के इछावर में झमाझम बारिश दर्ज की गई। पिछले 24 घंटे में प्रदेश के 29 जिलों में आंधी और बारिश हुई। श्योपुर में सबसे ज्यादा करीब पौने 2 इंच बारिश रिकॉर्ड की गई। भोपाल, नर्मदापुरम और राजगढ़ में भी अच्छी बारिश हुई है।

अब बिहार के हॉस्पिटल में आग, 5 लोगों की मौत

● कुछ मरीजों के गायब होने पर लोगों का जमकर हंगामा ● पुलिस बोली-दूसरे अस्पताल में हैं

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार के मुजफ्फरपुर में एक प्राइवेट अस्पताल के आईसीयू में आग लगने से 5 लोगों की मौत हो गई। वहीं, 20 से ज्यादा लोग झुलस गए। हादसा बुधवार रात करीब 3 बजे हुआ। आग शॉर्ट सर्किट से लगी। इसके बाद आईसीयू में लगे एसी में ब्लास्ट हुआ। इसकी वजह से आग तेजी से फैली। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड अस्पताल पहुंची और आग पर काबू पाया। लोगों ने मौके से स्टाफ के गायब होने का आरोप लगाया। परिजन अपने मरीजों को

स्ट्रैचर से बाहर ले जाते दिखे। आईसीयू वार्ड 5वीं फ्लोर पर है, जिसकी वजह से रेस्क्यू में दिक्कत आई। दमकलकर्मियों ने आईसीयू और अस्पताल के दूसरे वार्डों में फंसे मरीजों को खिड़कियां और दरवाजे तोड़कर बाहर निकाला। चार मृतकों की पहचान हो गई है, जिनमें, गीता देवी, चंचला कुमारी, 57 साल के उदय कुमार, 30 साल के शशांक कुमार शामिल हैं। एक की पहचान नहीं हो पाई है। वहीं, हादसे के बाद प्रसाद हॉस्पिटल से कई मरीज गायब बताए जा रहे हैं। इसे लेकर मरीज के परिजन हंगामा कर रहे हैं।

टीएमसी में बगावत, कांग्रेस-डीएमके की दूरी

● बीजेपी के लिए संसद में आसान होगी दो तिहाई बहुमत की राह

नई दिल्ली (एजेंसी)। अभी कुछ ही समय पहले तक ऐसा लग रहा था कि एक एकजुट विपक्ष केंद्र सरकार के महत्वाकांक्षी विधायी एजेंडे और उसके राजनीतिक नैरेटिव को पटरी से उतार सकता है। पिछले सत्र में लोकसभा के भीतर महिला आरक्षण कानून में संशोधन से जुड़े सरकारी विधेयक की हार ने विपक्ष के इस हौंसले को और मजबूत किया था। लेकिन अब संसद के भीतर और बाहर भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लिए आगे की राह बेहद आसान नजर आ रही है। इसकी मुख्य वजह यह है कि भाजपा के दो सबसे मजबूत क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक इस समय बड़े

राजनीतिक संकटों और चुनौतियों से जूझ रहे हैं। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली टीएमसी इस समय अपने राजनीतिक इतिहास के सबसे बड़े अस्तित्व के संकट का सामना कर रही है। पार्टी के कुल 80 विधायकों में से 58 बागी विधायकों के एक गुट ने ममता बनर्जी की पसंद के विपरीत ऋतब्रत बनर्जी को विपक्ष का नेता चुन लिया है। साल 1998 में ममता बनर्जी द्वारा पार्टी की स्थापना किए जाने के बाद से यह टीएमसी में अब तक का पहला औपचारिक विभाजन है। **भतीजे के खिलाफ गुस्सा-** टीएमसी के एक सांसद ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि यह पूरा विद्रोह अभिषेक के खिलाफ है।

डीएमके और कांग्रेस में दूरी

दक्षिण भारत में भी विपक्ष का गणित पूरी तरह बिगड़ चुका है। तमिलनाडु में कांग्रेस ने अपने पुराने और भरोसेमंद साथी द्रमुक का हाथ छोड़कर सुपरस्टार से नेता बने विजय की नई पार्टी टीवीके से हाथ मिला लिया है। इस धोखे के बाद डीएमके अब केंद्र सरकार के प्रति अपनी पारंपरिक और स्वाभाविक शत्रुता को छोड़कर एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने पर विचार कर रही है। भाजपा खेमे का मानना है कि राज्य के नए समीकरणों के कारण अब डीएमके केंद्र के साथ टकराव के बजाय सहयोग का रास्ता चुन सकती है।

सरकार के लिए गेमचेंजर साबित होगी यह स्थिति

हाल ही में हुए लोकसभा के घटनाक्रम को देखें तो यह कांग्रेस के साथ तीन बड़े क्षेत्रीय दलों समाजवादी पार्टी, टीएमसी और द्रमुक का एक साथ आना ही था, जिसने लोकसभा में सरकार के संविधान संशोधन विधेयक को गिरा दिया था। इन दलों के पास कुल 185 सांसद थे, जो सदन की कुल संख्या का एक-तिहाई से अधिक थे। टीएमसी के बिखराव और कांग्रेस से नाराज चल रही डीएमके के कारण भाजपा 2024 के चुनावों के बाद पहली बार विपक्ष की आपसी फूट का फायदा उठाने की सबसे मजबूत स्थिति में है। राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी तेज है कि महाराष्ट्र के कुछ विपक्षी सांसद भी पाला बदलने या अपनी निष्ठा बदलने पर विचार कर रहे हैं। विपक्ष के कमजोर और बिखरे होने के बाद अब मोदी सरकार अपने सबसे महत्वाकांक्षी एजेंडे जिसमें एक राष्ट्र, एक चुनाव शामिल है, को नए उत्साह और ताकत के साथ संसद में आगे बढ़ाने की तैयारी कर रही है।

शिवपुरी में रील्स के चक्कर में हवालात पहुंचे दो युवक

मगरमच्छ को टॉर्चर किया फिर पूंछ पकड़कर पानी में फेंका

शिवपुरी (नप्र)। आजकल सोशल मीडिया पर व्यूज और लाइक्स पाने के लिए लोग किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं, लेकिन मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के पिछोर क्षेत्र में दो युवकों को ऐसा करना बेहद भारी पड़ गया। सोशल मीडिया पर वायरल होने के लिए मगरमच्छ के साथ खतरनाक वीडियो बनाने वाले दो युवकों को वन विभाग ने स्पेशल टास्क फोर्स की मदद से हिरासत में ले लिया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत गंभीर धाराओं में मामला दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

मगरमच्छ की पूंछ पकड़कर पानी में फेंका

यह पूरा मामला ग्राम पंचायत गरेठा का है। यहां के रहने वाले सूखनंदन केवट (21 वर्ष) और तोरण आदिवासी (20 वर्ष) ने 29 और 30 मई के बीच एक वीडियो बनाया और उसे सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। वीडियो में दोनों युवक एक मगरमच्छ की पूंछ पकड़कर उसे बेरहमी से हवा में घुमाते और फिर उठाकर पानी में फेंकते नजर आ रहे हैं। हैरान करने वाली बात यह है कि पूरे वीडियो में मगरमच्छ के शरीर में कोई हलचल दिखाई नहीं दे रही है और उसके पेट के पास खून जैसा लाल निशान भी नजर आ रहा है।

मगरमच्छ की मौत की आशंका, जांच जारी

वीडियो के सोशल मीडिया पर वायरल होते ही वन विभाग की टीम अलर्ट मोड पर आ गई। त्वरित कार्रवाई करते हुए 2 जून को दोनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि, फिलहाल दोनों को जमानत मिल चुकी है, लेकिन मामले की जांच की आंच अभी ठंडी नहीं हुई है। वन विभाग को शक है कि वीडियो बनाने के दौरान या उससे पहले मगरमच्छ की मौत हो चुकी थी। यह इलाका माताटीला डैम के बैकवॉटर से जुड़ा है, जहां ग्रामीण अक्सर बिजली का करंट लगाकर अवैध रूप से मछलियां पकड़ते हैं। आशंका है कि करंट की चपेट में आने से ही मगरमच्छ की जान गई होगी।

गोवंश वध मामले में इमरान गिरफ्तार

महू। बंडा बस्ती में हुए चर्चित गोवंश वध मामले में महू थाना पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने मुख्य आरोपी और 5 हजार

रुपए के इनामी बदमाश इमरान खटखट को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी लंबे समय से फरार चल रहा था और उसकी तलाश में लगातार दबिश दी जा रही थी। पुलिस के अनुसार 2 जून को सूचना मिली कि थाना महू के अपराध क्रमांक 252/2026 में वांछित आरोपी इमरान खटखट चोरल डेम क्षेत्र में देखा गया है। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की। पुलिस वाहन को देखकर आरोपी भागने लगा और अंधेरे का फायदा उठाने के लिए पुलिया से नीचे कूद गया, लेकिन पुलिस ने पीछा कर उसे पकड़ लिया। एडिशनल एसपी रूपेश द्विवेदी ने बताया कि मामले के अन्य आरोपियों की तलाश जारी है और जल्द ही उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा। पुलिस मामले की आगे जांच कर रही है।

सिंहासा में घेराबंदी कर पकड़े दो तस्कर

इंदौर। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत चंदन नगर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से 18.59 ग्राम एमडी ड्रग्स और एक रॉयल एनफील्ड मोटरसाइकिल जब्त की है। जब्त सामग्री की कुल कीमत करीब 3.81 लाख रुपए बताई गई है। पुलिस के अनुसार सिंहासा क्षेत्र में संदिग्ध वाहनों की जांच के दौरान दो युवक मोटरसाइकिल पर संदिग्ध अवस्था में दिखाई दिए। पुलिस को देखकर दोनों भागने लगे, लेकिन घेराबंदी कर उन्हें पानी की टंकी के पास पकड़ लिया गया। तलाशी लेने पर उनके पास से एमडी ड्रग्स बरामद हुई। पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम अभिषेक सोलंकी और अशरफ उर्फ बंटी बताए। उन्होंने स्वीकार किया कि वे मंदसौर और रतलाम क्षेत्र से कम कीमत पर एमडी ड्रग्स खरीदकर इंदौर में छोटे पैकेट बनाकर अधिक दामों पर बेचते थे। पुलिस ने दोनों के खिलाफ एनडीपीएस अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया है। आरोपियों से मादक पदार्थ के स्रोत, आपूर्ति तंत्र और इससे जुड़े अन्य लोगों के बारे में पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के आधार पर अन्य तस्करों के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस का शिकंजा, 855 पर कार्रवाई

इंदौर। शहर में यातायात व्यवस्था को बेहतर और सुरक्षित बनाने के लिए यातायात पुलिस ने नियम तोड़ने वालों के खिलाफ अभियान तेज कर दिया है। पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह के मार्गदर्शन में विशेष पेट्रोलिंग और व्हील लॉक टीमों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में लगातार कार्रवाई की जा रही है। यातायात पुलिस ने रॉन्ग पार्किंग के 221, मोबाइल पर बात करते हुए वाहन चलाने के 85, यातायात संकेतों के उल्लंघन के 137, बिना लाइसेंस 51, नियम विरुद्ध नंबर प्लेट के 177, ब्लैक फिल्म लगे वाहनों के 33, बिना बीमा 79 और वनवे उल्लंघन के 72 मामलों में चालानी कार्रवाई की। पुलिस उपायुक्त (यातायात) राजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि प्रमुख बाजारों, व्यस्त मार्गों और अधिक यातायात दबाव वाले क्षेत्रों में नियमित पेट्रोलिंग से अवैध पार्किंग में कमी आई है। कई स्थानों पर यातायात का प्रवाह पहले से अधिक सुचारू हुआ है और वाहन चालकों में नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। लगातार निगरानी से जाम की स्थिति पर भी प्रभावी नियंत्रण पाया गया है।

आबकारी की कार्रवाई, शराब बाइक जब्त

इंदौर। आबकारी विभाग ने अवैध मदिरा के परिवहन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए कनाड़िया बायपास क्षेत्र से एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से दो पेटी शराब और परिवहन में प्रयुक्त मोटरसाइकिल जब्त की गई है। सहायक आबकारी आयुक्त अभिषेक तिवारी के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत मिली सूचना पर आबकारी उप निरीक्षक आशीष कुमार जैन ने कार्रवाई की। इस दौरान देवास निवासी 19 वर्षीय गोविंद बैरागी को अवैध मदिरा के साथ पकड़ा गया। आरोपी के पास से रॉयल चैलेंज ब्रांड की दो पेटी शराब तथा एक मोटरसाइकिल जब्त की गई। जब्त सामग्री और वाहन का कुल अनुमानित बाजार मूल्य करीब 80 हजार रुपए बताया गया है।

मांगलिया-राऊ को जंक्शन बनाने की मांग

इंदौर। इंदौर के तेजी से बढ़ते रेल नेटवर्क को देखते हुए सांसद ने केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मांगलिया और राऊ रेलवे स्टेशनों को बड़े जंक्शन के रूप में विकसित करने की मांग की है। हाल ही में रेल मंत्री से मुलाकात के दौरान सांसद ने इस संबंध में मांग पत्र सौंपा। सांसद ने कहा कि वर्तमान इंदौर रेलवे स्टेशन भौगोलिक सीमाओं के कारण सीमित विस्तार ही कर सकता है, जबकि आने वाले वर्षों में इंदौर छह दिशाओं से रेल संपर्क वाला प्रमुख शहर बनने जा रहा है। इससे 100 से अधिक ट्रेनों का दबाव रेलवे नेटवर्क पर बढ़ेगा। उन्होंने बताया कि इंदौर-खंडवा, इंदौर-दाहोद और इंदौर-मनमाड़ रेल परियोजनाओं के पूरा होने के बाद राऊ स्टेशन का महत्व और बढ़ जाएगा। इसी कारण मांगलिया और राऊ को विकसित कर अतिरिक्त रेल संचालन की व्यवस्था जरूरी है। भविष्य में 50 से अधिक ट्रेनों की सर्विसिंग को देखते हुए पिट लाइन सहित आवश्यक रेलवे अधोसंरचना विकसित करने की मांग भी रखी है। उनका कहना है कि इससे इंदौर रेलवे क्षेत्र का प्रमुख केंद्र बन सकेगा।

कब्जे की कोशिश नाकाम, जमीन छुड़ाई

इंदौर। सरकारी जमीन पर रातों-रात कब्जा जमाने की कोशिश को प्रशासन ने नाकाम कर दिया। सांवेर तहसील के ग्राम कजलाना में लगभग 2 करोड़ रुपए मूल्य की शासकीय भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया गया। जानकारी के अनुसार खसरा क्रमांक 97/2/1, रकबा 0.70 हेक्टेयर भूमि, जिसे इंदौर-उज्जैन सिक्स लेन सड़क परियोजना के लिए भू-अर्जन के बाद शासकीय भूमि के रूप में दर्ज किया गया है। अज्ञात लोगों ने 2 जून की रात गिट्टी और मुरम डालकर अवैध कब्जे का प्रयास किया था। मामले की सूचना मिलते ही कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देश पर एसडीएम के नेतृत्व में राजस्व विभाग की टीम मौके पर पहुंची। तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक और पटवारी की मौजूदगी में कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से डाली गई गिट्टी और मुरम हटाई गई तथा पूरी भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया गया। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शासकीय भूमि पर कब्जे या अतिक्रमण की किसी भी कोशिश को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

पीट-पीटकर पत्नी की हत्या, पति गिरफ्तार

इंदौर। कम्पेल चौकी अंतर्गत ग्राम उज्जैनी में बुधवार को एक सनसनीखेज वारदात सामने आई। फार्म हाउस पर चौकीदारी करने वाले एक युवक ने कथित रूप से अपनी पत्नी की पीट-पीटकर हत्या कर दी। घटना के बाद पुलिस ने आरोपी पति को हिरासत में ले लिया। पुलिस के मुताबिक आरोपी राहुल बर्मन (32) पुत्र राजेश बर्मन, मूल निवासी ग्राम बीरसिंहपुर थाना पाली जिला उमरिया का रहने वाला है। वह वर्तमान में ग्राम उज्जैनी स्थित आसिफ रंगरेज के फार्म हाउस पर चौकीदारी का काम करता था। बताया जा रहा है कि मंगलवार रात किसी बात को लेकर राहुल और उसकी पत्नी सुमन बर्मन (26) के बीच विवाद हो गया। विवाद बढ़ने पर राहुल ने सुमन के साथ जमकर मारपीट की।

दिल्ली के होटल में आग के बाद इंदौर प्रशासन की अग्नि सुरक्षा पर चिंता बढ़ी

इंदौर। दिल्ली के मालवीय नगर स्थित एक होटल में आग लगने से 21 लोगों की मौत के बाद देशभर में अग्नि सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर सवाल उठ रहे हैं। इंदौर में भी स्थिति पूरी तरह संतोषजनक नहीं मानी जा सकती। शहर में सैकड़ों छोटे-बड़े होटल और 1500 से अधिक भोजनालय संचालित हो रहे हैं, लेकिन इनमें से बड़ी संख्या के संबंध में प्रशासन के पास समग्र जानकारी उपलब्ध नहीं है। दिल्ली की घटना के बाद नगर निगम ने एक बार फिर उन होटलों और इमारतों की जांच शुरू की है, जहां आग से बचाव के पर्याप्त इंतजाम नहीं हैं। हालांकि इससे पहले भी कई बार ऐसे अभियान चलाए गए, लेकिन वे कुछ समय बाद ठंडे पड़ गए। अब दिल्ली हादसे के बाद प्रशासन ने फिर से पड़ताल तेज करने का निर्णय लिया है।

अनुमति पत्र की अनिवार्यता

मध्यप्रदेश में अग्नि सुरक्षा संबंधी कानून पूरी तरह लागू नहीं होने के कारण 50 बिस्तरों से कम क्षमता वाले होटलों को अग्नि सुरक्षा अनापत्ति प्रमाण पत्र लेने की बाध्यता नहीं है। यही वजह है कि बड़ी संख्या में छोटे होटल और आवासीय प्रतिष्ठान बिना किसी औपचारिक निगरानी के संचालित हो रहे हैं। नगर निगम के अग्नि सुरक्षा अधिकारी विनोद मिश्रा के अनुसार ऐसे होटलों का कोई रिकॉर्ड उनके विभाग के पास उपलब्ध नहीं है, क्योंकि वे अनापत्ति प्रमाण पत्र के लिए आवेदन ही नहीं करते।

सैकड़ों होटल और 1500 से अधिक भोजनालयों का पूरा ब्यौरा नहीं

32 भवन सील, इनमें 7 होटल

नगर निगम ने हाल के अभियान में सुरक्षा मानकों का पालन नहीं करने वाले 32 भवनों को सील किया है। इनमें 7 होटल भी शामिल हैं। जांच के दौरान कई स्थानों पर अग्निशमन के बुनियादी साधन तक नहीं मिले। कई व्यावसायिक प्रतिष्ठान और होटल बिना पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्थाओं के संचालित पाए गए। नगर निगम के अपर आयुक्त आशीष पाठक ने कहा कि तीन मंजिल से अधिक ऊंचाई वाली सभी इमारतों की नियमित जांच की जा रही है। विशेष रूप से होटलों और अस्पतालों में अग्नि सुरक्षा व्यवस्थाओं का परीक्षण किया जा रहा है। जिन भवनों में आवश्यक इंतजाम नहीं पाए जा रहे हैं, उनके विरुद्ध सील करने जैसी कार्रवाई भी की जा रही है। दिल्ली की घटना के बाद अब इंदौर में भी अग्नि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रशासनिक सतर्कता बढ़ गई है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि स्थायी सुधार के लिए नियमित निगरानी और व्यापक रिकॉर्ड तैयार करना जरूरी होगा।

10 हजार ऊंची इमारत, जांच 452 की- शहर में तीन मंजिल से अधिक ऊंचाई वाली 10 हजार से ज्यादा इमारतें हैं। इनमें करीब एक हजार भवन घनी आबादी और व्यस्त क्षेत्रों में स्थित हैं, जहां किसी भी आपात स्थिति में राहत और बचाव कार्य करना बेहद चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इन सभी इमारतों की जांच का लक्ष्य तय किया गया था, लेकिन पिछले दो महीनों में केवल 452 भवनों का ही निरीक्षण किया जा सका है। इससे स्पष्ट है कि अभी बड़ी संख्या में इमारतों की जांच बाकी है।

सर्वे में चौंकाने वाली स्थिति

जिन सात होटलों को सील किया गया, वहां अग्नि सुरक्षा की मूलभूत व्यवस्था भी नहीं थीं। सबसे गंभीर तथ्य यह रहा कि इन प्रतिष्ठानों की जानकारी भी निगम के अभिलेखों में व्यवस्थित रूप से दर्ज नहीं थी। सर्वे के बाद ही प्रशासन को उनकी वास्तविक स्थिति का पता चल सका। अधिकारियों का कहना है कि भले ही सभी होटलों के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना अनिवार्य न हो, लेकिन अग्नि सुरक्षा उपकरण रखना और सुरक्षा परीक्षण कराना सभी के लिए आवश्यक है।

छोटे होटलों का पूरा रिकॉर्ड नहीं- इंदौर में करीब 250 से 300 छोटे-बड़े होटल तथा 1500 से अधिक भोजनालय संचालित हैं। बड़े होटलों की निगरानी अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि वे अनापत्ति प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करते हैं। इसके विपरीत छोटे होटल और आवासीय प्रतिष्ठानों की संख्या, क्षमता और सुरक्षा इंतजामों का कोई समग्र रिकॉर्ड प्रशासन के पास उपलब्ध नहीं है। ऐसे में किसी दुर्घटना की स्थिति में राहत और बचाव कार्यों के दौरान अतिरिक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

बिश्नोई गिरोह के गुर्गे की नजर बिल्डरों पर, राहुल बाबा से पूछताछ में खुलासे

जेल भेजे जाने के बाद फिर पूछताछ, एसआईटी जोड़ेगी कई कड़ियां

इंदौर। कारोबारियों और बिल्डरों को धमकाकर वसूली की कोशिशों से जुड़े मामले में गिरफ्तार लारेंस बिश्नोई गिरोह के सदस्य राहुल उर्फ बाबा से पूछताछ में कई महत्वपूर्ण जानकारियां सामने आई हैं। 25 हजार रुपये के इनामी आरोपी ने स्वीकार किया है कि वह अपने साथियों के साथ शहर के प्रमुख निर्माण व्यवसायी विवेक दम्मानी की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए इंदौर आता था। प्रारंभिक पूछताछ और रिमांड अवधि पूरी होने के बाद उसे जेल भेज दिया गया है, लेकिन अब विशेष कार्य बल उसे दोबारा रिमांड पर लेकर पूछताछ की तैयारी कर रहा है। जांच में सामने आया है कि शहर के चर्चित बिल्डर विवेक दम्मानी और संजय जैन को गिरोह के सदस्य हैरी बॉक्सर के नाम से लगातार धमकियां दी जा रही थीं। इस मामले में अब तक 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। संजय जैन से जुड़े प्रकरण सहित प्रदेशभर के लगभग एक दर्जन मामलों की जांच विशेष कार्य बल कर रहा है। इंदौर पुलिस ने भी संबंधित प्रकरण की जांच विशेष दल को सौंप दी है ताकि गिरोह के पूरे नेटवर्क का पता लगाया जा सके।

कई आपराधिक मामलों में नाम

राहुल बाबा का नाम पहले भी कई आपराधिक मामलों में

सामने आ चुका है। कसरावद में एक कपास व्यापारी के घर पर हुई गोलीबारी की घटना में भी उसकी भूमिका उजागर हुई थी। पूछताछ के दौरान उसने स्वीकार किया कि वारदात को अंजाम देने के लिए उसने ही अपने लोगों को भेजा था। इस बयान के बाद जांच एजेंसियां प्रदेश में रंगदारी, धमकी और वसूली से जुड़े अन्य मामलों में भी उसकी भूमिका की पड़ताल कर रही हैं।

तकनीकी साक्ष्यों का परीक्षण- गिरफ्तारी के समय आरोपी के पास से एक वाहन और मोबाइल फोन बरामद किया गया है। जांच दल उसके संपर्कों, बातचीत के विवरण और अन्य तकनीकी साक्ष्यों का परीक्षण कर रहे हैं। अधिकारियों का मानना है कि इन जानकारियों से गिरोह के संचालन और उससे जुड़े लोगों के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य सामने आ सकते हैं। विशेष कार्य बल फिलहाल इस मामले के 5 अन्य आरोपियों से भोपाल में पूछताछ कर रहा है। आगामी दिनों में राहुल बाबा को भी उनके सामने बैठाकर पूछताछ की जाएगी, ताकि प्रदेश में सक्रिय इस गिरोह के पूरे तंत्र और उसकी गतिविधियों की स्पष्ट तस्वीर सामने आ सके।

रिवॉर्ड पॉइंट के झांसे में आई युवती खाते से 1.76 लाख रु निकाले गए

लिंक खोलते ही मोबाइल बंद, बाद में लेनदेन के संदेश से खुलासा

इंदौर। रिवॉर्ड पॉइंट भुनाने के नाम पर साइबर ठगों ने एक युवती को निशाना बनाते हुए उसके खाते से 1 लाख 76 हजार रुपए निकाल लिए। युवती ने जैसे ही संदेश में भेजे गए लिंक को खोलकर प्राप्त कूट संख्या दर्ज की, उसका मोबाइल काम करना बंद कर गया। कुछ दिनों बाद खाते से रकम निकलने की जानकारी मिलने पर उसने पुलिस और साइबर शाखा से शिकायत की। मामला एमआईजी थाना क्षेत्र का है। खजराना मेन रोड निवासी प्रियंका सोनी ने पुलिस को बताया कि 24 मई को उसके मोबाइल पर एक्सिस बैंक के नाम से एक संदेश प्राप्त हुआ था। संदेश में रिवॉर्ड पॉइंट भुनाने का प्रस्ताव दिया गया था और इसके लिए बैंक की वेबसाइट बताकर एक लिंक भेजा गया था। प्रियंका ने लिंक खोलकर अपना मोबाइल नंबर दर्ज किया। इसके बाद उसके मोबाइल पर एक कूट संख्या आई। कूट संख्या दर्ज करते ही मोबाइल ने काम करना बंद कर दिया। उस समय उसे किसी प्रकार की धोखाधड़ी का अंदेशा नहीं हुआ।

मोबाइल पर तीन संदेश मिले

घटना के छह दिन बाद, 30 मई को उसके मोबाइल पर तीन संदेश प्राप्त हुए। इन संदेशों में बताया गया कि 24 मई को उसके खाते से लगभग 49 हजार रुपए, 26 मई को 99 हजार रुपए तथा 28 मई को करीब 28 हजार रुपए स्थानांतरित किए गए हैं। इस तरह कुल 1 लाख 76 हजार रुपए खाते से निकल चुके थे। जानकारी मिलने पर प्रियंका ने अपने खाते के लेनदेन की जांच की। पड़ताल में सामने आया कि अलग-अलग यूपीआई पहचान माध्यमों से उसके खाते से रकम दूसरे खातों में भेजी गई थी। इसके बाद उसने परिजनों को पूरी जानकारी दी और साइबर शाखा में शिकायत दर्ज कराई।

खाताधारकों की पड़ताल - शिकायत की जांच के बाद पुलिस ने युवती को थाने बुलाकर प्रकरण दर्ज कर लिया है। पुलिस अब उन खाताधारकों की जानकारी जुटा रही है, जिनके खातों में यह रकम पहुंची है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि ठगी की इस वारदात में किन लोगों की भूमिका रही है। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि किसी भी बैंक या वित्तीय संस्था के नाम से आने वाले संदिग्ध संदेशों में दिए गए लिंक पर बिना पुष्टि किए जानकारी दर्ज न करें और किसी भी स्थिति में प्राप्त कूट संख्या साझा न करें।

अधिक मुनाफे के झांसे में युवती से 21.30 लाख रु ऐंठे, फिर धमकाया

निवेश का भरोसा दिलाकर कर्ज दिलाया, पहले मुनाफा दिया

इंदौर। खजराना थाना क्षेत्र में अधिक मुनाफा कमाने का लालच देकर एक युवती से 21 लाख 30 हजार रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि दो लोगों ने शेयर बाजार में निवेश के नाम पर युवती से अलग-अलग किश्तों में बड़ी रकम जमा करवाई, लेकिन बाद में न तो मूल राशि लौटाई और न ही किसी प्रकार का लाभ दिया। रकम वापस मांगने पर आरोपियों ने धमकियां देना शुरू कर दीं। पुलिस ने शिकायत के आधार पर प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। खजराना पुलिस के अनुसार भोपाल के अशोका गार्डन क्षेत्र निवासी हेमा शर्मा की शिकायत पर सत्येंद्र द्विवेदी और संजय जायसवाल के खिलाफ धोखाधड़ी और गबन का मामला दर्ज किया गया है। हेमा ने पुलिस को बताया कि उसकी सहेली शिवानी इंदौर में रहती है। उसी ने दोनों आरोपियों से उसकी मुलाकात कराई थी। शिवानी ने हेमा को बताया था कि सत्येंद्र और संजय शेयर बाजार से जुड़ा कारोबार करते हैं और लोगों को अच्छा लाभ दिलाते हैं। इसी भरोसे के आधार पर अगस्त 2023 में खजराना स्थित टास्कस बिजनेस पार्क, रेडिसन चौराहे के पास दोनों आरोपियों से उसकी मुलाकात हुई।

शुरुआत में दिया लाभ

हेमा के अनुसार उसने शुरुआत में 60 हजार रुपए निवेश किए थे। कुछ समय तक आरोपियों ने उसे कमीशन के रूप में राशि भी दी, जिससे उसका विश्वास और मजबूत हो गया। बाद में शिवानी ने बताया कि उसने भी ऋण लेकर बड़ी राशि निवेश की है और उसे अच्छा लाभ मिल रहा है। यह सुनकर हेमा ने भी बैंक से ऋण लेकर निवेश करना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, उसने अपनी बहन के वेतन से भी हर महीने रकम निकालकर आरोपियों को देना शुरू कर दिया। 21.30 लाख रुपए जमा कराने के बाद बंद हुआ भुगतान।

नगर निगम में 92 करोड़ के फर्जी बिल घोटाले में ईडी की कार्रवाई

पूर्व सहायक यंत्री सहित 3 गिरफ्तार, तीन दिन की रिमांड

इंदौर। नगर निगम में सामने आए करोड़ों रुपए के फर्जी बिल घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जांच एजेंसी ने नगर निगम के पूर्व सहायक यंत्री अभय सिंह राठौर, ठेकेदार मोहम्मद जाकिर और राहुल वडेरा को हिरासत में लिया है। तीनों को विशेष न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें पूछताछ के लिए तीन दिन की रिमांड पर भेज दिया गया। जांच में अब तक करीब 92 करोड़ रुपए के फर्जी बिलों और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े दस्तावेज सामने आए हैं। एजेंसी पैसों के लेनदेन, कथित फर्जी दस्तावेजों की तैयारी और इस पूरे मामले में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी पड़ताल कर रही है। प्रारंभिक जांच के अनुसार यह मामला

नगर निगम की नाली निर्माण और जल निकासी परियोजनाओं से जुड़ा है। आरोप है कि मिलीभगत कर ऐसे दस्तावेज और बिल तैयार किए गए, जिनके आधार पर करोड़ों रुपए के भुगतान की प्रक्रिया बनाई गई। जांच के दौरान कई रिकॉर्ड और फाइलें संदिग्ध पाई गई हैं।

निगम ने ही खोली गड़बड़ी

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि नगर निगम ने इस मामले का खुलासा पहले ही कर दिया था। ड्रेनेज कार्यों से संबंधित फर्जी फाइलें और बिल बनाकर निगम को आर्थिक नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई थी। मामला सामने आने पर जांच कराई गई और संबंधित लोगों के खिलाफ कार्रवाई भी की गई। महापौर ने बताया कि शुरुआती चरण में पुलिस ने भी कुछ आरोपियों को गिरफ्तार किया था। उन्होंने कहा कि उन्होंने राज्य सरकार से विस्तृत जांच की मांग की थी, जिसके बाद जांच प्रक्रिया आगे बढ़ी। अब उम्मीद है कि इस पूरे नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की भूमिका भी सामने आएगी और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

भाजपा पार्षद के बेटे की कार से किशोर को टक्कर, रिपोर्ट नहीं

शिकायत के बावजूद प्रकरण दर्ज नहीं, राजनीतिक दबाव

इंदौर। जूनी इंदौर थाना क्षेत्र में एक भाजपा पार्षद के बेटे पर नाबालिग किशोर को कार से टक्कर मारकर गंभीर रूप से घायल करने का आरोप लगा है। पीड़ित परिवार ने मामले को दबाने के लिए राजनीतिक प्रभाव का उपयोग किए जाने और पुलिस द्वारा समय पर कार्रवाई नहीं करने के आरोप लगाए हैं। घटना खातीवाला टैंक क्षेत्र की बताई जा रही है। परिजनों के अनुसार 1 जून 2026 को दोपहर करीब 3:30 बजे वार्ड क्रमांक 65 के भाजपा पार्षद की कार क्रमांक एमपी-13 एएच-0414 ने कृष्णा यवत रामानी नामक नाबालिग को टक्कर मार दी। हादसे में किशोर गंभीर रूप से घायल हो गया। परिवार का आरोप है कि दुर्घटना के समय वाहन पार्षद का बेटा चला रहा था। घायल किशोर को उपचार के लिए एवीपी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी स्थिति गंभीर होने के कारण पैर में तीन रॉड डालनी पड़ीं। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल प्रशासन ने घटना की सूचना पुलिस को नहीं दी और जल्द ही

किशोर को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

परिवार पर दोहरी मार

पीड़ित परिवार ने बताया कि कृष्णा के पिता का पहले ही निधन हो चुका है। उसकी मां पैरालिसिस से पीड़ित हैं और लंबे समय से बिस्तर पर हैं। ऐसे में हादसे के बाद परिवार आर्थिक और मानसिक संकट से गुजर रहा है। परिवार का दावा है कि मामले से जुड़ी कुछ ऑडियो रिकॉर्डिंग भी सामने आई हैं। उनके अनुसार शुरुआत में यह कहा गया कि घटना के समय आरोपी वाहन में मौजूद नहीं था, जबकि बाद में समझौते के लिए आर्थिक सहायता देने की बात कही गई। हालांकि इन रिकॉर्डिंग की अब तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

थाने से लौटाने का आरोप

परिजनों का कहना है कि जब वे शिकायत लेकर जूनी इंदौर थाने पहुंचे तो पुलिस ने घायल किशोर या किसी प्रत्यक्षदर्शी को साथ लाने की बात कहकर उन्हें वापस भेज दिया। परिवार का आरोप है कि उनकी शिकायत पर प्रकरण दर्ज नहीं किया गया और केवल रोजनामचे में उल्लेख कर उन्हें लौटा दिया गया। उधर जूनी इंदौर थाना प्रभारी अनिल गुप्ता ने कहा कि मामला अभी उनके संज्ञान में नहीं आया है। उन्होंने यह भी बताया कि अस्पताल प्रशासन की ओर से भी दुर्घटना की कोई सूचना नहीं दी गई।

संपादकीय

दिल्ली में मौत का होटल !

देश की राजधानी नई दिल्ली के मालवीय नगर के एक दड़बेनुमा होटल में लगी आग से 21 लोगों की जानें चली जाना वास्तव में इंसानी जानों का भ्रष्टाचार की आग में जल जाना है। विडंबना तो यह है कि मरनेवाले अधिकांश लोग इस होटल के पास स्थित बड़े अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती अपने परिजनों की तीमारदारी के लिए ठहरे हुए थे। इनमें से एक अग्रवाल परिवार के बीमार बुजुर्ग तो यह भी पता नहीं था कि उसकी देखभाल के आए बेटे और उसका पूरा परिवार इस आग में जलकर राख हो गया है। इस भयंकर अग्नि कांड में मरने वाले आधे से ज्यादा वो विदेशी नागरिक थे, जो अपने परिजनों का इलाज करवाने भारत आए थे। ये सभी गरीब देशों के नागरिक थे, जो भारत में तुलनात्मक रूप से सस्ता इलाज होने के कारण यहां ठहरे थे। इस आगजनी में जो लोग बचाए जा सके, वो होटल के आसपास रहने वाले लोगों की फौरी मदद और जददोहद के कारण बच सके। एक गद्दा व्यापारी ने तो अपनी दुकान के सारे तकिए होटल के नीचे बिछाने के लिए दे दिए ताकि कम से कम कुछ लोग तो अपनी जान ऊपर से कूदकर बचा सकें। पड़ोसियों ने भी हर संभव मदद कर इंसानियत का परचम ऊंचा रखा। इसकी वजह से आठ लोग अपनी जान बचा सके। इस भयावह अग्निकांड में इस देश में चल रहे 'रामराज' की पोल खोलकर रख दी है। हमारे यहां किसी कानून कायदे का कोई मतलब नहीं है। पैसे देकर आप कुछ भी हासिल कर सकते हैं, किसी भी नियम कायदे को ताक पर रख सकते हैं। आपका कहीं कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस हादसे में भी जो खुलासे अब हो रहे हैं, वो चौंकाने वाले हैं। मसलन जिस जगह ये होटल ताना गया था, वो रिहाइशी इलाका है और यहां की गलियां इतनी पतली हैं कि चार पहिया गाड़ी अंदर नहीं जा सकती। इसी गली में यह अभिशप्त होटल फ्लीरिश स्टे बीएंडबी बना हुआ है। होटल के गिरफ्तार मालिक ने पुलिस के सामने कबूल किया कि उसके पास बेड एंड ब्रेकफास्ट का ही लायसेंस था। होटल का कोई लायसेंस उसके पास नहीं है। उसे शुरू में परमिशन केवल छह कमरों की मिली थी, लेकिन उसने छोटी सी जगह में 25 कमरे तान दिए। आश्चर्य की बात यह है कि पूरी होटल में कहीं से बाहर निकलने का वैकल्पिक मार्ग नहीं था। यहां तक कि खिड़कियां तक पैक कर दी गई थीं। मानों यहां इंसान नहीं, जानवर ठहरते हों। इससे आग को तेजी से फैलने में मदद मिली और होटल में ठहरे यात्रियों के लिए वह काल बन गया। इस होटल के पास अग्नि सेवा का लायसेंस भी नहीं था। होटल के मालिक लवकेश बजाज का बयान तो और भी चौंकाने वाला है। उसे आग लगने की खबर मिल चुकी थी। लेकिन वह लोगों और होटल को बचाने की जगह वहां से भाग गया और दिल्ली की सड़कों पर घूमता रहा। यह तो संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। पुलिस ने उसके खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मामला दर्ज किया। लवकेश ने होटल शायद ठेके पर दे रखा था। होटल का मैनेजर अभी भी फरार है। दिल दहला देने वाला हादसा हो जाने के बाद अब सरकार सक्रिय हुई है। लेकिन व्यवस्था में कोई परिवर्तन होगा, इसकी संभावना नहीं के बराबर है। क्योंकि हालात को बदलने और सुधारने की चिंता किसी को नहीं है। बताया जाता है कि इस इलाके में ऐसे करीब 20 होटल चल रहे हैं, जिन पर इस हादसे के बाद ताले पड़ गए हैं। भ्रष्टाचार के इस खेल में इंसानी जानें जाती रहेंगी और किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

पर्यावरणीय समस्याओं का हल समाज के पास

नजरिया

श्याम बोहरे
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

एक तरफ तो नदियों को गंदा करते रहें, बर्बाद करते रहें, वृक्ष काट-काट कर मातृभूमि को उजाड़ते रहें, कारखानों और वाहनों के धुंयें से मलयज शीतलाम को जहरीला करते रहें और जोश में वन्दे मातरम का नारा भी लगाते रहें? जबानी जमा-खर्च के लिए कि मातृभूमि की वन्दना और व्यवहार में उसे बर्बाद करते रहना। यह कब तक चलेगा? जिन्हें भी वन्दे मातरम प्रेरित करता है, मातृ भूमि से लगाव है, पहले तो वे इसका मतलब समझें। यदि स्वार्थ और लालच से मुक्ति पा सकें तो ही मतलब समझ आयेगा और क्या करना है, वह भी समझ में आ ही जाएगा।

पर्यावरण के प्रति हमारे नजरिये को 'साईं इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाये, मैं भी भूखा न रहूं साधु भी भूखा न जाए' से लेकर 'ये दिल मांगे मोर' तक की यात्रा को अलग अलग नजरिये से देखा जा सकता है। समाज का एक वर्ग इसे उपलब्धता, सम्पन्नता और विकास मानकर खुश है, वहीं दूसरे वर्ग के साथी इसे विनाश यात्रा के रुप में देखते हैं। दरअसल, यह मामूली नजर आने वाली बात हमारे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सोच और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता पर निर्भर करती है कि हम आखिर चाहते क्या हैं? जोश में आकर वन्दे मातरम और भारत माता की जय का नारा लगाते हैं, जोश अच्छी बात है यदि इसमें होश भी शामिल हो जाये तो सोने में सुहागा हो सकता है। वन्दे मातरम में भारत माता की वन्दना करते हैं। वन्दे मातरम, सुजलाम सुफलाम, मलयज शीतलाम, सस्यश्यामलाम मातरम। वन्दे मातरम। द्रुमदल शोभनीम मातरम वन्दे मातरम। मतलब जहां अच्छा और भरपूर जल, खूब अच्छे फल हों; जहां मलय पर्वत से; चन्दन हवा यानी ठण्डी हवा बहती हो; ऐसी मातृभूमि की वन्दना करता हूं। लहलहाती फसलों से हरी भरी भूमि की वन्दना करता हूं। जो वृक्षों के झुण्ड से सुशोभित हो, ऐसी मातृभूमि की वन्दना करता हूं।

एक तरफ तो नदियों को गंदा करते रहें, बर्बाद करते रहें, वृक्ष काट-काट कर मातृभूमि को उजाड़ते रहें, कारखानों और वाहनों के धुंयें से मलयज शीतलाम को जहरीला करते रहें और जोश में वन्दे मातरम का नारा भी लगाते रहें? जबानी जमा-खर्च के लिए कि मातृभूमि की वन्दना और व्यवहार में उसे बर्बाद करते रहना। यह कब तक चलेगा? जिन्हें भी वन्दे मातरम प्रेरित करता है, मातृ भूमि से लगाव है, पहले तो वे इसका मतलब समझें। यदि स्वार्थ और लालच से मुक्ति पा सकें तो ही मतलब समझ आयेगा और क्या करना है, वह भी समझ में आ ही जाएगा।

इसी तरह की बात गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कही है - देश की माटी देश का जल/ हवा देश की देश के फल/ सरस बनें प्रभु सरस बनें/ देश के घर और देश के घाट/ देश के वन और देश के बाट/ सरल बनें प्रभु सरल बनें। देश के तन और देश के मन/ देश के घर और भाई बहन/ विमल बनें प्रभु विमल बनें।

देश की माटी, जल, फल, हवा, सरस कैसे बनेंगे? कौन बनायेगा? यह जानने के लिए क्या किसी भारी-भरकम वर्कशॉप या सेमिनार की जरुरत है? यदि नहीं तो फिर कयामत का इंतजार किस खुशी में किया जा रहा है? जाहिर है इन सभी सदइच्छाओं के अनुकूल नीति, योजना, कार्यक्रम बनाकर काम करना होगा। ऐसी नीति और कार्यक्रम बनाने के लिए कुदरत के प्रति संवेदनशील और लगाव वाली दृष्टि तथा भावनात्मक लगाव चाहिए, जैसा आदिवासी समाज के पास रहा है। आदिवासियों के साथ जो आज हो रहा है उसकी शुरुआत शताब्दियों पहले अमेरिका के मूल निवासी रेड इंडियनस के संसाधनों की लूट और नरसंहार के साथ हो गई थी। अमेरिका के गोरे शासकों के प्रमुख ने खबर भेजी कि वे रेड इंडियनस की जमीन खरीदना चाहते हैं। रेड इंडियनस कबीले

के लोग यह समझते थे कि यदि वे अपनी जमीन नहीं देंगे तो गोरे लोग तोप लेकर आ जायेंगे। रेड इंडियन कबीले के चीफ सिएटल ने अमेरिकन प्रमुख के नाम जो पत्र भेजा वह प्रकृति के साथ अपने कबीले के लोगों के सम्बन्ध और भावनाओं को व्यक्त करने वाला संभवतः सबसे संवेदनशील दस्तावेज है। पत्र में वे लिखते हैं-

'तुम कैसे बेच या खरीद सकते हो आकाश को? या पृथ्वी के प्यार को? जब हवा की ताजगी और पानी की निर्मलता हमारी मिल्कियत नहीं है तो तुम हवा और पानी के मालिक कैसे बन सकते हो? मेरी मां ने मुझसे कहा था, इस जमीन का एक-एक कतरा मेरे लोगों को पूज्य है। पेड़ों का एक-एक पत्ता, एक-एक रेतीला तट, शाम के कोहरे से ढंका हुआ जंगल, घास का मैदान और भौंरों का गुंजन, पक्षियों का मधुर संगीत ये सभी पवित्र और पूज्य हैं, ये सभी हम आदिवासियों की यादों और जीवन से गूंथे हैं। ये पेड़ अपनी रगों में हमारी अतीत की यादें संजोए हुए हैं। मरने पर भी हम नहीं भूलते अपनी मिट्टी। यहां के सुगन्धित फूल हमारे भाई बहन हैं। ये हिरण, ये घोड़े, ये विशाल पक्षी। सब हमारे भाई हैं। पहाड़ों की चोटियां, मैदानों की हरियाली और घोड़ों के बच्चे- यह सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं। हमारे पूर्वजों की आवाज हमसे कहती है कि नदियों और झरनों में बहता हुआ यह निर्मल जल, केवल पानी नहीं - बल्कि हमारे पूर्वजों का लहू है। पानी की कल-कल में सुनाई देती है पूर्वजों की आवाज। यह नदियां हमारी मित्र हैं। यह हमारी प्यास बुझाती हैं। इनकी लहरों पर खेलती हैं हमारी छोटी-छोटी नावें, जो मिटातीं हैं हमारे बच्चों की भूख और प्यास। इसलिए तुम इन नदियों को उतना ही प्यार और दुलार देना जितना तुम अपने सगे भाई को देते हो। मेरे दादा जी ने मुझसे कहा था यह हवा ही सब जीवों का पोषण करती है और सबके साथ अपनी आत्मा बांटती है। इसी हवा में हमारे पुरखों ने ली पहली और आखिरी सांस। तुम इस जमीन और हवा को पवित्र रखना। जिससे तुम लोग भी उसका आनन्द ले सको। मेरे पुरखों ने मुझसे कहा था और हम सभी यह जानते हैं। हम इस धरती के मालिक नहीं हैं। हम इस पृथ्वी का बस एक अंग हैं। मेरी दादी ने मुझसे कहा था, कि तुम अपने बच्चों को वही सिखाना, जो तुमने खुद सीखा है। यह धरती हमारी मां है, जो कुछ धरती का होगा, वही धरती के बच्चों का होगा। सभी चीजें एक दूसरे से जुड़ी हैं। इंसान ने नहीं बुना है जीवन का ताना-बाना। वह तो उसमें सिर्फ कमजोर सा धागा है। हमारे साथ भी वही होगा जो हम ताने-बाने के साथ करेंगे। इस जमीन को, इस हवा को इन नदियों को संभाल कर रखना अपने बच्चों के बच्चों के लिए और इन्हें वही प्यार देना जो उन्हें हमने दिया है।'

रेड इंडियन कबीले के चीफ ने जो लिखा है, उसमें कौन सी बात है जो समझ में न आयी हो? यदि समझ में आ गई है तो फिर परेशानी क्या है? परेशानी यह है कि समाज लगातार कमजोर होता जा रहा है और सरकार का शिकंजा कसते ही जा रहा है। कमजोर समाज और मजबूत सरकार स्वस्थ लोकतंत्र नहीं है।

जब तक समाज अपनी प्राकृतिक सम्पदा के साथ अपने सम्बंध फिर से स्थापित नहीं कर लेता और अपने प्राकृतिक संसाधनों की देखरेख अपने हाथ में नहीं लेगा, तब तक उसकी सुरक्षा और संवर्धन की बात संभव नहीं है। गांधी जी ने चेतावनी देते हुए कहा कि 'पता नहीं हम अपना यह कर्तव्य कब पूरा करेंग? इसे नहीं निभा पाए तो हमारे समाज पर मुसीबत आने वाली है। और वह आनी ही चाहिए, अगर समाज अपने को सुधारता नहीं है।' समाज की सम्पदा को राज्य की सम्पत्ति में बदलने की नीति ने इसे प्रशासनिक नियंत्रण के दायरे में ला दिया है। प्रशासन समाज की सम्पदा को बाजार को सौंपते ही जा रहा है।

महाराष्ट्र के आदिवासी इलाके मेंढा-लेखा में काम करने वाले मोहन हीराबाई हीरालाल का कहना है कि 'पर्यावरण के अनुरुप कोई भी विकास प्रक्रिया अंततः एक नई संस्कृति की मांग करती है। उस संस्कृति के अनुसार काम करने के लिए कोई व्यक्ति, संस्था या संगठन बदलाव का वाहक बनता है। लोगों के लिए काम करने की जगह लोगों के साथ काम करने की शैली विकसित करने की सतत कोशिश होना चाहिए।' दरअसल, ये समाज के सरोकार और काम हैं, जो औपनिवेषिक ढांचे में ढली हमारी नौकरशाही के मिजाज के माफिक नहीं हैं। इसलिए इन्हें स्वैच्छिक संस्थाओं को करना होता है। किये भी हैं, उदाहरण के लिए उत्तराखण्ड में चिपको आन्दोलन, केरल में साइलेंट वेली और चेलियार नदी को प्रदूषण से बचाने का आन्दोलन, गोवा में मछुआरों का आन्दोलन, बिहार में बोधगया भूमि संघर्ष, मध्य प्रदेश में नर्मदा बचाओ आन्दोलन और मिट्टी बचाओ आन्दोलन, पश्चिम घाट का संघर्ष सहित देशभर में जल जंगल जमीन बचाने के अनेकों अंचलों में हो रहे आन्दोलन पर्यावरण को बचाने के लिए जूझ रहे हैं। विडंबना यह है कि सरकारी अफसर खुद तो कुछ करते नहीं उल्टे इन आन्दोलनों को कुचलने का काम करते रहते हैं। सरकारी अमले की इस प्रवृत्ति पर नकेल, समाज की लोकतांत्रिक चेतना और जन आन्दोलन ही कर सकते हैं। लोक सेवकों को औपनिवेशिक ढांचे से निकाल कर जनोन्मुखी बना सकें, विकेन्द्रियकृत स्वशासन की संवैधानिक संस्थाओं ग्राम पंचायतों और ग्राम सभाओं को सक्रिय कर सकें तो ही जनता की सरकार जनता के द्वारा चलाई जा सकेगी। सक्रिय जन भागीदारी ही सामुदायिक सम्पदा को सम्हाल कर वन्दे मातरम, सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम को सार्थक कर सकेगी।

विश्व पर्यावरण दिवस

चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता।

महज एक दिन का विमर्श या स्टेटस लगा लेना काफी नहीं

प्रकृति ही वास्तविक पाठशाला है !

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी शांतिनिकेतन के अपने संस्मरण में लिखते हैं कि मैंने शांतिनिकेतन के बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा था। लेकिन शांतिनिकेतन को प्रत्यक्ष देखने पर मेरा कुतूहल और भी बढ़ता गया। शांतिनिकेतन में सबसे विचित्र बात यह थी कि उस आश्रम का प्रत्येक वृक्ष या कुंज आश्रम का उतना ही जीवंत आत्मीय सदस्य जान पड़ता था,जितना कोई अध्यापक या छात्र हो सकता है। आशा दी (श्रीमती आशा नायकम शांतिनिकेतन की रेक्टर) ने प्रत्येक वृक्ष का कुछ न कुछ इतिहास बताया। मैंने उन स्थानों को देखा जहां कभी दीनबंधु एंड्रूज रहते थे प्रोफेसर सिलवा लेवी पढ़ते थे,स्टेन कोनो भाषाविज्ञान का अध्यापन करते थे, जहां कभी गुरुदेव रहते थे और गान या कविता लिखा करते थे। सबसे आकर्षक और प्रेरणादायक सप्तपर्णा का वह घनच्छाय निकुंज था जो आश्रम का मूलस्थान कहा जाता है। इस स्थान पर कभी गुरुदेव के पिता महर्षि देवेंद्रनाथ बैठा करते थे और उपनिषदों के साथ साथ हाफिज का अध्ययन और मनन किया करते थे। मूल शांतिनिकेतन इन्हीं वृक्षों को केंद्र में रखकर गठित हुआ,जिसमें बहुत दिनों बाद कविवर ने बोलपुर ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की जो आजकल %विश्वभारती% के रूप में एक बहुत बड़ी संस्था बन गयी है। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन में विद्यार्थियों को अधिक से अधिक प्रकृति के साहचर्य में रखने का प्रयास किया। उन्होंने बार बार इस बात पर जोर दिया था कि गांव-गांव में फैला हुआ यह वृहत्तर मानवसमाज ही हमारी वास्तविक पुस्तक है। विद्यार्थियों को इसे ही पढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए और जंगलों, पहाड़ों और मैदानों में फैली हुई विश्व-प्रकृति ही वास्तविक पाठशाला है। शिक्षा कोई जड़ वस्तु नहीं है,वह चिन्मय वस्तु है। जो लोग पुस्तकों में बंद प्राणहीन शिक्षण प्रणालियों में आयोजित शिक्षा को ही प्रधान वस्तु समझते हैं,वे मूल में गलती करते हैं। सबसे बड़ी चीज है मनुष्यत्व। मनुष्य के संपर्क में आने से ही विद्यार्थी का सच्चा मनुष्यत्व जागृत होता है। क्लास रूम टीचिंग के बरक्स प्रकृति के सानिध्य में शिक्षा और अन्य प्राणियों व जीव जंतुओं के साथ भी तारतम्य स्थापित इसका मकसद था। शांतिनिकेतन में गुरुदेव रोज सुबह टहलते थे और एक एक फूल-पत्ती को उनमें होने वाले परिवर्तनों को ध्यान से देखते थे। एक दिन मैं और एक अन्य अध्यापक साथी भी गुरुदेव के साथ हो लिए थे। बातचीत के सिलसिले में गुरुदेव ने पूछा कि आश्रम के कौए को क्या हो गया आजकल उनकी आवाज सुनाई नहीं देती हैं? न ही मुझे और न ही मेरे साथी अध्यापक को इस बात की खबर थी। बाद में मैंने जब इस ओर ध्यान दिया तो मुझे भी महसूस हुआ कि काफी दिनों से कौए दिखाई नहीं दे रहे हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखते हैं कि ÷तब तक मैंने कौओं को सर्वव्यापी पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि कौए भी कभी-कभी प्रवास पर चले जाते हैं या चले जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं÷। गुरुदेव ही आश्रम के पक्षियों और जीव-जंतुओं का ध्यान नहीं रखते थे,वे भी गुरुदेव का सानिध्य और स्नेह पाने का प्रयास करते थे उनमें से एक कुत्ता और एक मैना भी थे जो नियत समय पर गुरुदेव को आकर्षित कर स्नेह पाने का प्रयास करते थे। शांतिनिकेतन में गुरुदेव से जुड़ी ये छोटी-छोटी बातें,उनके कवि मन की कल्पना प्रकृति,मानव व जीव मात्र के प्रति करुणा और अपनेपन से भर देती है। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर अपने निबंध ÷तपोवन÷ में पश्चिम से आ रही नगर संस्कृति का जिसमें प्रकृति का घोर शोषण होता है के विरोध में भारत की अरण्य संस्कृति की उच्चता को स्थापित करते है। वे भारतीय तथा यूरोपीयों के प्रकृति संबंधी दृष्टिकोण में अंतर भी प्रकट करते है जो यूरोपीय वर्चस्ववाद का प्रतिरोध है।

वे लिखते है कि मनुष्य जिस जगत-प्रकृति से घिरा हुआ है उसका मनुष्य के चिंतन के साथ और उसके कार्य के साथ आंतरिक योग है। यदि मनुष्य का संसार नितांत मानवमय हो उठे,यदि मनुष्य के पीछे-पीछे प्रकृति भी उसमें प्रवेश न कर सके,तो हमारे विचार और कर्म कलुषित तथा व्याधिग्रस्त होंगे,अपनी मलिनता के अथाह सागर में आत्महत्या कर बैठेंगे। प्रकृति हमारे बीच नित्य काम करते हुए भी यह दिखाती है कि वह चुपचाप खड़ी है,जैसे हम ही काम-काज में व्यस्त हों और वह बेचारी केवल अलंकार की वस्तु हो। सर्वप्रथम जब भारतीय सभ्यता का विकास हुआ,लोग एक-दूसरे से बिलकुल सटकर नहीं बैठे,उन्होंने एक साथ जमा होकर भीड़ नहीं जमाई। यहां वृक्ष-नदी-सरोवर का मनुष्य के साथ लोग बना रहा। यहां मनुष्य भी था,निर्जन स्थान भी थे,निर्जनता से भारत का चित्त जड़ नहीं हुआ,वरन उसकी चेतना और भी उज्ज्वल हो उठी। हम कह सकते हैं कि शायद दुनिया में और कहीं ऐसा न हुआ होगा।

पहले-पहल जब लोग एक स्थान पर जमा होकर नगर बसाते थे तो उनकी यह रचना सभ्यता के आकर्षण से नहीं होती थी। शत्रुओं के आक्रमण से बचने के लिए लोग किसी सुरक्षित स्थान पर एकत्रित होने लगे। जहां भी अनेक मनुष्य एक स्थान पर साथ-साथ रहने लगते हैं वहां उनके प्रयोजन और बुद्धि को एक विशिष्ट रूप मिल जाता है और सभ्यता की अभिव्यक्ति होने लगती है। लेकिन भारतवर्ष में आश्चर्यजनक बात देखी गई। यहां सभ्यता का मूल स्रोत नगर में नहीं,बल्कि वन में था। प्राचीन भारत में वन की विजनता ने मानवीय बुद्धि को पराजित नहीं किया,वरन एक ऐसी शक्ति प्रदान की जिससे उस वनवासजन्य सभ्यता की धारा ने सारे भारत को अभिषिक्त किया। आज भी उस धारा का प्रवाह रुका नहीं है। भारत ने अपनी सभ्यता का परिचय मुख्य रूप से ऐश्वर्य के उपकरणों द्वारा नहीं दिया। इस सभ्यता के कर्णधार अरण्य-निवासी,अल्पवसन तपस्वी थे। मनुष्य जाति का इतिहास जीव-धर्मी है। एक निगूढ़ प्राण-शक्ति उसे आगे बढ़ाती है। वह लोहे-पीतल की तरह सांचे में ढालने की चीज नहीं है। हो सकता है कि किसी विशेष समय पर बाजार में किसी विशेष सभ्यता का भाव बहुत तेज हो जाए लेकिन सारे मानव-समाज को ही कारखाने में ढालकर फैशन से प्रभावित मूढ़ खरीददारों को खुश करने की आशा बिलकुल व्यर्थ है। छोटे पैरों को सौंदर्य का अभिजात लक्षण मानकर चीन की स्त्रियों ने कृत्रिम उपायों से अपने पैरों को संकुचित बनाना चाहा। लेकिन इस प्रयत्न से उन्हें छोटे पैर नहीं,बल्कि विकृत पैर मिले। भारत भी यदि जबरदस्ती अपने-आपको यूरोपीय आदर्शों पर ढाले तो वह प्रकृत यूरोप नहीं बन सकता विकृत भारत ही बन सकता है। एक देश का दूसरे देश के साथ यथार्थ संबंध अनुकरण पर नहीं आदान-प्रदान पर आधारित होता है। जो चीज हमारे पास अधिक मात्रा में है वही अगर अन्य के पास भी हो, तो हम दोनों में लेन-देन नहीं चल सकता। भारत यदि विशुद्ध रूप से भारत न हो तो विदेशियों के बाजार में मजदूरी करने के अतिरिक्त दुनिया में उसका कोई प्रयोजन नहीं रहेगा। ऐसी दशा में वह आत्म-सम्मान बोध खो देगा और अपने आप में उसे आंनद प्राप्त नहीं होगा। भारतवर्ष ने जिस सत्य को अपने निश्चित भाव से उपलब्ध किया है वह सत्य क्या है? वह सत्य प्रधानतः वणिक-वृति नहीं है,स्वदेशिकता नहीं है, स्वराज्य नहीं है-वह है विश्व-बोध। इस सत्य की भारत के तपोवन में साधना हुई है। चूने-गारे से बने नगरों के विस्तार के सामने या कहें नगरीय सभ्यता के बरक्स गुरुदेव ने प्राचीन वन संस्कृति जिसने तपोवन की अवधारणा उत्पन्न की उसके महत्व के बारे में विस्तार से लिखा। उन्होंने प्राचीन भारत के इतिहास के दो बड़े युगों वैदिक और बौद्ध युग में वन ने भारत के लिए किस प्रकार से %धात्री रूप% धारण किया था उसका उल्लेख करते हैं। साथ ही वे बताते हैं कि वैदिक ऋषियों ने ही नहीं,भगवान बुद्ध ने भी आम्रवनों और वेणुवनों में उपदेश दिए थे। वन तथा संपूर्ण प्रकृति हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा थी। आज भी धार्मिक अनुष्ठानों में,विभिन्न व्रत और उपवासों में वृक्षों,फूल-पत्तियों,नदियों,पर्वतों का विशेष महत्व है। लेकिन हम इनको साफ-सुथरा रखने,इनके संरक्षण और संवर्धन के लिए न कोई प्रयास करते हैं ओर न ही कोई मुहिम नहीं चलाते हैं,और न ही इनकी दुर्दशा के लिए जिम्मेदार तत्वों की खोज कर उनका निराकरण करते हैं। हमारे देश में नदियों के साथ गहरी आस्था जुड़ी हुई है लेकिन उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत नहीं होता है। अभी हाल ही में सोशल मीडिया पर दो वीडियो वायरल हुए थे जिनमें से एक पीपल के वृक्ष का था जिस पर जमा रक्षा सूत्र की एक मोटी परत को हटाया जा रहा था और दूसरा वट वृक्ष में लगी आग का था जो शायद पूजा करते समय लग गई थी। ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे लेकिन आवश्यकता प्रकृति के महत्व को बरकरार रखते हुए,उसके संरक्षण,संवर्धन और उसके प्रति जागरूकता की है क्योंकि प्रकृति है तो कल है। वर्तमान समय में पूंजीवादी व्यवस्था ने अधिक उपभोग करने की प्रणाली को जन्म दिया है जो उपभोक्तावादी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। इसी संदर्भ में रवींद्रनाथ टैगोर का एक और लेख 'रॉबरी ऑफ द सॉइल' है जो आज से कई वर्षों पूर्व लिखा गया था,लेकिन वह आज भी प्रासंगिक है। टैगोर का मानना है कि एक उच्चस्तरीय जीवनशैली की जो चाह पहले समाज के एक छोटे हिस्से में ही व्याप्त थी,वह महत्वाकांक्षा के रूप में अब समाज के एक बड़े हिस्से में फैल गई है। इसी के परिणामस्वरूप हर कहीं पानी खत्म हो रहा है तो कहीं पेड़ों की कटाई हो रही है और धरती बंजर हो रही है। आधुनिक सभ्यता में लक्ष्मी का आसन जिस कमल पर विद्यमान है वह ईट और लकड़ी का बना है-वह नगर है। उन्नति का सूर्य जैसे-जैसे आकाश में ऊपर उठता है, इस विशाल कमल की पंखुड़ियाँ खिल-खिलकर चारों और व्याप्त हो जाती हैं। इस चूने-गारे के विस्तार को रोकना पृथ्वी के लिए असंभव सा हुआ जा रहा है। गुरुदेव के द्वारा शांतिनिकेतन में किए गए प्रयोग की आज के समय में अत्यंत आवश्यकता है। क्योंकि प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष तारतम्य स्थापित न होने से उपभोक्तावादी प्रवृत्ति में लगातार वृद्धि हो रही है और हम प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। महज एक दिन पर्यावरण पर विमर्श कर लेने से या सोशल मीडिया पर स्टेटस लगा देने से हमें पर्यावरणीय संकटों से निजात नहीं मिल सकती हैं इसके लिए ठोस प्रयासों की दरकार है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जलती पराली में घुटता किसान

विश्व पर्यावरण दिवस

देवेंद्र काशिव
लेखक साहित्यकार हैं।

मतौर पर पारंपरिक खेती में फसल कटने के बाद खेतों में बचें हुए अवशेषों अथवा डंठलों को जलाने , की प्रक्रिया अपनाई जाती है,जो पिछले कई वर्षों से आज भी निरंतर चली आ रही है। लेकिन प्रशासनिक उदासीनता व जनमानस में इसके प्रति जागरूकता की कमी की वजह से अब इसके दुष्परिणाम भी सामने नजर आने लगे है। हालांकि पराली जलाने की प्रक्रिया की तस्वीरें सैटेलाइट के अलावा शिकायतों के आधार पर अब प्रत्यक्ष देखी व समझी जाने लगी है , जिनके आधार पर अब स्थानीय प्रशासन ऐसी घटनाओं पर कार्रवाई कर रहा हैं।

वास्तव में देखा जाए तो जहां भी पराली जलाई जाती है, उसके आसपास,उस संपूर्ण क्षेत्र में उत्पन्न तपिश को कई गज की दूरी से महसूस किया जा सकता है ,जो पर्यावरण को नुकसान तो पहुंचती ही हैं ,साथ ही हमारे आम जन जीवन को भी बुरी तरह से प्रभावित करतीं हैं। पिछले 5 साल में पूरे प्रदेश में लगभग 77000 पराली जलाने के प्रकरण सामने आए हैं ,जिन पर स्वछ्रक जैसी कार्यवाहियां भी हुई है।लेकिन यक्ष प्रश्न यही उठता है की किसान आखिर नरवाई जलाता ही क्यों है ,क्या उसे पर्यावरण के नुकसान अथवा अपने खेत की उपजाऊ भूमि की मित्र बैक्टीरिया के नष्ट होने की चिंता नहीं है ,इन सब के पीछे उसकी क्या मजबूरी है ,जो वह अपनी आसान ,सस्ती व पारंपरिक खेती के इस तरीके को वह छोड़ नहीं पा रहा है। लेकिन व्यवहारिकता में देखा जाए तो जिन कृषि भूमियों में गेहूं की फसल के पश्चात मूंग आदि जैसी अन्य ग्रीष्मकालीन फसले ली जाती है, तो उनमें तीन से चार सिंचाई का पानी देने के कारण, गेहूं की फसल कटाई के पश्चात शेष रहे डंठल अथवा नरवाई पूरी तरह से खत्म हो जाती है । परिणामस्वरूप वहां नरवाई जलाने की प्रक्रिया नहीं के बराबर होती है,लेकिन ऐसी कृषि भूमि जहां गेहूं की फसल के पश्चात सीधे सोयाबीन फसल के बीज की ही बुवाई की जाती हैं , वहां इन अवशेषों (नरवाई)के बने रहने की स्थिति में बीज की बुवाई में तकनीकी अड़चन आती है,जो बारिश के पानी से नरम होकर सामान्य सीड ड्रिल मशीनों में फंसकर उसे जाम कर देती हैं। इसलिए उन कृषि भूमियों के किसान वहां वे नरवाई जलाने के पारंपरिक तरीके अपनाने से चूकते नहीं है।यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि सोयाबीन की बुवाई मानसून की पहली बारिश में भराप (खेतों में पर्याप्त पानी)आने के पश्चात ही की जाती है।दूसरी ओर यदि किसान अपने पूरे खेत की मिट्टी को पलटकर गहरी जुताई से नरवाई को दबाने की कोशिश करते भी हैं, तो जमीन की नमी व उर्वरक क्षमता दोनों के समाप्त होने का खतरा उसमें उत्पन्न हो जाता है । अतः ऐसी स्थिति में किसान के पास पारंपरिक प्रक्रिया अपनाने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं बचता है।जो कि प्राकृतिक रूप से सभी के लिए बहुत ही ज्यादा खतरनाक व हानिकारक है।एसी स्थिति में इनकी रोकथाम के लिए सरकारी स्तर पर सिर्फ प्रशासनिक कार्यवाही पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि उस क्षेत्र के किसानों, सामाजिक संगठनों, एनजीओ, एवं पर्यावरण हितैषी मित्रों का सहयोग लेकर, इससे होने वाली क्षति व उससे बचाव के लिए तकनीकी मार्गदर्शन देकर उसे और अधिक ठोस व सकारात्मक प्रयास किए जाने आवश्यक है।मसलन आधुनिक कृषि उपकरण निर्माताओं को इस ओर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए,जैसे ड्रोन से नैनो खाद के छिड़काव आदि के संसाधन विकसित किए हैं, ठीक वैसे ही नरवाई ना जलाने के लिए प्रत्येक खेतीहर कृषक को नरवाई प्रबंधन के लिए आधुनिक व मजबूत वैज्ञानिक तकनीकी से लैस रोटावेटर और प्लाऊ जैसे अन्य संसाधन की उपलब्धता को आसान व सुलभ पहुंच वाला बनाया जाए ,नरवाई न जलाने पर प्रोत्साहन स्वरूप उसे अन्य कोई ऐसी सुविधा का लाभ दिया जाए जिसे वे देख व समझकर हर किसान अपनी स्वेच्छा से प्रेरित हो , तथा इस विनाशकारी प्रक्रिया को त्याग कर ,पर्यावरण हितैषी खेती अपनाने की ओर अग्रसर हो सके।

सदानीरा के साथ छोटी नदियां भी बचाएं

बरसात के समय अच्छी बारिश के बावजूद क्या वजह है कि गर्मी के मौसम की आहट से ही पीने के पानी का संकट शुरू हो जाता है। हमारे ज्यादातर संस्थान, होटल्स, आवासीय इलाके भूमिगत जल के ऊपर निर्भर हैं। आखिर हम कब तक और कितने जल भंडार को अपने स्वार्थ के लिये खाली करते रहेंगे। ऐसे में तो भूमिगत जल भंडार भी अकूत नहीं रहेंगे जिसका दुष्प्रभाव हमें ही झेलना होगा। यह खतरनाक खेल चल भी रहा है। सिर्फ गर्मियों में ट्यूबवेल खनन पर रोक लगाने की औपचारिकता से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। इसके लिये एक सुविचारित दीर्घकालीन नीति पर अमल की दरकार है। मध्यप्रदेश के ही सबसे बड़े शहर इंदौर की ही बात करें तो वहां के कुछ इलाकों में पानी के लिये त्राहि - त्राहि मची है। इस तरह की खबरें प्रदेश के अन्य हिस्सों से भी आती रहती है कि पानी के लिये लोग जान जोखिम में डालकर गहरे अंधे कुंओं में उतरकर अपने पीने का पानी ले रहे हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

आम तौर पर पर्यावरण संरक्षण, सुधार और बढ़ते प्रदूषण को रोकने के उद्देश्य से किये जाने वाले उपायों- प्रबंधों को ही पर्यावरण सुरक्षा का साधन मान लिया जाता है। लेकिन व्यापक अर्थों में इसमें ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, रहवासी इलाकों में बढ़ती कमर्शियल गतिविधियों, होटल्स,मनोरंजन, खान-पान के स्थान, टायर ट्यूब, वाहनों की मरम्मत, वाहनों के हॉर्न, गैर जरूरी निर्माण के चलते उठते धूल के गुबार,शोरगुल तथा डीजे आदि के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक शोर को शामिल किया जाना चाहिये।

एक और ज्वलंत मुद्दा है बड़ी पवित्र नदियों गंगा यमुना, मंदाकिनी, नर्मदा आदि के साथ पार्वती, क्षिप्रा, बेतवा, घोड़ा पछाड़ , नेवज और उतावली जैसी नदियों को सदानीरा बनाये रखने के लिये इनमें होने वाले प्रदूषण को सख्ती से रोका जाये और जहां भी इनके आसपास अतिक्रमण हो उन्हें हटाया जाये। नदियों के जल में बढ़ते प्रदूषण, प्लास्टिक, पन्नियों, कचरे के ढेर तथा कल- कारखानों से निकलकर नदियों में मिलने वाले प्रदूषित गंदे पानी, सीवरेज आदि को ना केवल रोका जाये बल्कि ऐसा करने वाले संबंधित संस्थानों, निकायों पर कठोर कार्रवाई की जाना समय की मांग है।

बरसात के समय अच्छी बारिश के बावजूद क्या वजह है कि गर्मी के मौसम की आहट से ही पीने के पानी का संकट शुरू हो जाता है। हमारे ज्यादातर संस्थान, होटल्स, आवासीय इलाके भूमिगत जल के ऊपर निर्भर हैं। आखिर हम कब तक और कितने जल भंडार को अपने स्वार्थ के लिये खाली करते रहेंगे। ऐसे में तो भूमिगत जल भंडार भी अकूत नहीं रहेंगे जिसका दुष्प्रभाव हमें ही झेलना होगा। यह खतरनाक खेल चल भी रहा है। सिर्फ गर्मियों में ट्यूबवेल खनन पर रोक लगाने की औपचारिकता से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। इसके लिये एक सुविचारित दीर्घकालीन नीति पर अमल की दरकार है। मध्यप्रदेश के ही सबसे बड़े शहर इंदौर की ही बात करें तो वहां के कुछ इलाकों में पानी के लिये त्राहि - त्राहि मची है। इस तरह की खबरें प्रदेश के अन्य हिस्सों से भी आती रहती है कि पानी के लिये लोग जान जोखिम में डालकर गहरे अंधे कुंओं में उतरकर अपने पीने का पानी ले रहे हैं।

यह सब देखकर लगता है कि प्रकृति हमसे प्रसन्न नहीं है और उससे खिलवाड़ का नतीजा है यह सब संकट। साल 2026 आधा भी नहीं बीता कि कितनी बुरी खबरें, प्राकृतिक आपदाएं, घटनाएं सामने आई हैं। इंदौर, दिल्ली, लखनऊ आदि जगहों पर आग लगने की घटनाओं में पूरे परिवार के लोग मारे गये। चलती कार, बसों, ट्रेन और प्लाइट्स में आग लगने की घटनाएं हुई। वृंदावन में पर्यटकों की नाव डूबी तो कश्मीर के गेंडोला में रोप-वे में खराबी के चलते तकरीबन 300 से ज्यादा पर्यटक मौत के मुंह से बचाये गये। बरगी में पर्यटकों से भरी क्रूज डूबी तो गंगा में नाव डूबी। तात्पर्य यह है कि आपदाओं की जैसे श्रृंखला चल रही है।

इधर भगवान सूर्यदेव भी ताप बरसाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं । सभी जगह गर्मी का पारा नये रिकॉर्ड छू रहा है। सोचें जब पारा 47 डिग्री से भी ऊपर जाता है तो लोगों जनजीवन की क्या हालत होती होगी।हमारे प्रदेश में स्थित प्रमुख पर्यटन स्थल खजुराहो भीषण गर्मी की चपेट में है। राजस्थान के सीमावर्ती इलाके लू से जूझ रहे हैं। देश के अनेक भागों में कमोबेश यही हालात बने हुए हैं।

इस आलेख की शुरूआत सदानीरा पवित्र नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिये सामूहिक प्रयासों, लोगों की भागीदारी की जरूरत से हुई। सो, एक उदाहरण पर्याप्त है। बीते दिनों वृंदावन के युवा कथावाचक पंडित इंद्रेश जी महाराज ने मुंबई के दादर और बाद में उल्हासनगर में श्रीमदभागवत पुराण कथा के दौरान बड़ी संख्या में मौजूद युवाओं को इंगित करते हुए कहा कि पवित्र यमुना जी के जल को स्नान और आचमन योग्य बनाने में अपना भरपूर योगदान करें। वे स्वयं भी इस पुनीत कार्य में उनका साथ देंगे। दरअसल भागवत कथा में चल रहे पर्यावरण संरक्षण संबंधी प्रसंग में उन्होंने वृंदावन शतक के श्लोक का उल्लेख करते हुए यह बात कही। इंद्रेश जी ने कहा कि वृंदावन में ठाकुर जी के दर्शन को लाखों श्रद्धालुजन पहुंचते हैं लेकिन अब वहां ना तो सघन वन बचे हैं और ना ही यमुना का जल निर्मल तथा प्रदूषण मुक्त बचा है। स्वयं का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि यमुना जी का शुद्ध जल दूरस्थ स्थान कटा पत्थर से मंगवाते हैं। यह बहुत गंभीर और चिंताजनक स्थिति है।

इंद्रेश जी ने कहा कि भागवत में सम्पूर्ण कृष्ण लीला पर्यावरण की शुद्धता, वन और जल के संरक्षण का संदेश देती है। प्रभु को कुंजबिहारी ऐसे ही नहीं कहा जाता। उन्होंने कहा कि युवाओं को यमुना जी को निर्मल बनाने का बीड़ा उठाना चाहिये। जब भी आप वृंदावन जायें कम से कम 10 पौधे अवश्य लगायें। युवाओं में यह क्षमता है कि वे अपनी ऊर्जा इसमें लगा सकते हैं। वृंदा एक गोपी का नाम था और वहां के सघन पेड़ पौधों की वजह से यह वृंदावन कहलाया। इंद्रेश जी ने वैष्णवों से भी यही आग्रह किया कि वे भी इसमें सहयोग करें। दरअसल इंद्रेश जी कथाओं में उपस्थित श्रोताओं में युवाओं की संख्या अत्यधिक देखी जाती है। यहां तक कि युवाजन कथा प्रारंभ होने के समय से घंटों पहले पहुंचकर अपने लिये आगे बैठने की जगह बना लेते हैं। मुंबई से लेकर नासिक, कोलकता, कोटा, सागर, कटनी जैसे शहर ही नहीं बल्कि आस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि देशों में भी कमोबेश यही दृश्य दिखाई देते हैं। स्पष्ट है कि इंद्रेश जी ने अपनी वाणी के माधुर्य से वैष्णवों के साथ युवक- युवतियों को भी प्रभावित किया है और आजकल के जेन- जी में वे बहुत लोकप्रिय हैं। हम स्वयं भी डेढ़ दो साल से उन्हें फॉलो कर कथा श्रवण कर रहे हैं।

इस बार पर्यावरण दिवस पर हम पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और जंगलों में आग लगने की बात को ज्यादा तरजीह नहीं दे पा रहे हैं क्योंकि यह सालाना प्रलाप कब तक किया जाये, पेड़ों की कटाई रोकना किसी के बूते की बात नहीं लगती और ना ही कटते जलते जंगलों को फिर से लगाया जा सकता है। बरसात में हरेक साल लाखों करोड़ों पौधे वृक्षारोपण के नाम पर लगाने की बात की जाती है किंतु वे पौधे कहां किस हालत में हैं कोई नहीं बताता। जंगल घटते जायेंगे नतीजतन गर्मी का पारा बढ़ता ही जायेगा फिर आप कितने ही एसी, कूलर और पंखे चलाते रहिये। इस समस्या का हल किसी राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार आदि से भी नहीं बल्कि लोगों, युवाजन के पुरूषार्थ से ही निकल सकता है।

नर्मदा तीरे फिर भी प्यासा बड़वानी

नर्मदा से मालवा की धरती और लोगों की प्यास बुझाने का घोषणा करने वाली सरकार नर्मदा से चार कदम की दूरी पर जिला मुख्यालय बड़वानी में ही जलप्रदाय करने में नाकाम हो चुकी है,दूसरी ओर हर घर नल जल कि योजना के परिणाम जिले मे अनुकुल नहीं हैं,आज 150 रुपया मासिक जल कर देने वाले बड़वानी नगर के उपभोक्ताओ को नपा द्वारा संचालित सशुल्क नीर जल खरीदना पद रहा है। आजादी के पूर्व बड़वानी रियासत की राजधान रहा बड़वानी कस्बे में सन 1908 से नगरपालिका अस्तित्व में है। आजादी के बाद कई दशकों तक कस्बे को स्थानीय धोबड़िया तालाब और रामकुलेश्वर नाले से भरपूर पानी मिलता था। इसके अलावा कस्बे में कुएँ-बावड़ियों की अच्छी खासी संख्या रही है।

बेपानी समाज

राजेन्द्र जोशी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

सबसे पहले सत्तर के दशक में 6 इंच सीमेंट पाईप लाईन डाकर राजघाट स्थित नर्मदा से जलप्रदाय प्रारंभ किया गया। स्थानीय जलस्रोतों की उपेक्षा होने तथा जीवन शैली में बदलाव के कारण सन 1977 में चिखल्दा से 49 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता की योजना से जलप्रदाय किया जाने लगा। सरदार सरोवर बाँध से प्रभावित हुई इस योजना के बदले नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण (एनवीडीए) द्वारा 1 करोड़ 4 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता की योजना बनाकर नगरपालिका को सौंपी गई। कसरावद में बनाए गए इंटेकवेल वाली इस योजना का संचालन बावनगजा मेले के दौरान जनवरी 2008 में प्रारंभ किया गया।

आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि एनवीडीए द्वारा नगरपालिका के लिए कस्बे की अगले 20 सालों की जरुरत के हिसाब से डिजाईन की गई योजना का जब निर्माण जारी था उसी समय वर्ष 2006 में करीब 6 करोड़ के बजट वाली नगरपालिका अलग से साढ़े पाँच करोड़ की एक योजना को पास करवाने की कोशिश में थी। एनवीडीए की योजना के चालू हो जाने के बाद भी नगरपालिका का यह प्रयास 3 सालों तक जारी रहा।

2011 की जनगणना के अनुसार बड़वानी कस्बे की जनसंख्या 55,504 थी और तब कस्बे की पूरी जनसंख्या के लिए दोनों योजनाओं से रोजाना डेढ़ करोड़ लीटर से अधिक पानी की उपलबधता थी। दूसरे शब्दों में बड़वानी के हर नागरिक के लिए निर्धारित 135 लीटर प्रतिदिन से दुगना यानी रोजाना 276 लीटर पानी की उपलब्धता थी।

लेकिन, 19 दिसंबर 2011 को नगरपालिका ने अपनी साढ़े पाँच करोड़ की प्रस्तावित योजना को अचानक त्याग दिया क्योंकि मुख्यमंत्री शहरी पेयजल योजना के तहत 25 करोड़ की बम्पर योजना स्वीकृत होने वाली थी। इस नई प्रस्तावित योजना के प्रचार के लिए पर्याप्त जलप्रदाय करने वाली तत्कालीन जलप्रदाय योजना में कमियाँ गिनाई जाने लगी और जलसंकट का डर दिखाया जाने लगा। इसके लिए बकायदा रोजना चौबीसों घण्टे जलप्रदाय के जुमले के साथ अखबारों में एक्सक्लूसिव खबरें प्लांट की गई।

सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि अप्रैल 2012 में जब मुख्यमंत्री शहरी पेयजल योजना योजना स्वीकृत हुई तब शहर में निर्वाचित परिषद

अस्तित्व में नहीं थी। इस योजना की शर्त के अनुसार राज्य सरकार लागत राशि का केवल 80 प्रतिशत पैसा ही उपलब्ध करवाती है। शेष 20 प्रतिशत राशि नगरीय निकायों को कर्ज लेनी होती है। इस हिसाब से बड़वानी की योजना के लिए कर्ज राशि 5 करोड़ होती है। निर्वाचित परिषद की अनुपस्थिति में तत्कालीन मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने 11 अप्रैल 2012 को शासन को लिखे पत्र में यह जिम्मेदारी ले ली थी कि कर्ज राशि की वसूली हेतु वे जल दरों को 4 तक गुना बढ़ा देंगें।

वर्तमान में एनवीडीए द्वारा निर्मित योजना और मुख्यमंत्री शहरी जलप्रदाय योजना दोनों सुचारु रुप से संचालित हैं और दोनों की संयुक्त क्षमता 2 करोड़ 17 लाख लीटर प्रतिदिन है। यदि बड़वानी की जनसंख्या 80 हजार मान ली जाए तो आज भी कस्बे के हर नागरिक को 310 लीटर जलप्रदाय रोजाना किया जा सकता है। लेकिन, सच्चाई यह है कि सामान्य दिनों में भी यहाँ एक दिन छोड़ कर जलप्रदाय किया जाता।

पिछले एक साल से जलप्रदाय सीवरेज लाइन निर्माण के चलते अनियमित होकर कस्बे में जल संकट की स्थिति निर्मित हो गई है। नगरपालिका में विपक्षी दल कांग्रेस ने इसके खिलाफ प्रदर्शन भी किया है वहीं वर्तमान परिषद ने इसकी जिम्मेदारी पिछली परिषद पर डाल दी है।

विधानसभा चुनाव सिर पर होने के कारण सरकार ने इसे गंभीरता से लिया तथा फिर से साढ़े 6 करोड़ की एक नई योजना की घोषणा कर दी है। साथ ही, जलप्रदाय की समस्या के समाधान के साढ़े 6 करोड़ अपर्याप्त बताते हुए 10 करोड की माँग भी कर दी है जबकि किसी नई जलप्रदाय योजना की कोई जरुरत नहीं है।

वर्तमान में समस्या जलप्रदाय तंत्र की क्षमता या पानी की कम उपलब्धता नहीं है। सरदार सरोवर जलाशय का जल स्तर कम होने से इंटेकवेल तक पानी की पहुँच कम हो जाती है। हालांकि यह बहुत छोटी समस्या है लेकिन इंटेकवेल तक पानी का नहीं पहुँच पाना स्पष्ट रुप से जन प्रतिनिधियों, योजनाकारों और योजना बनाने के लिए करोड़ों रुपए की कंसलटेंसी वसूल करने वाले सलाहकारों की क्षमता पर बहुत बड़ा सवालिया निशान खड़ा करती है। इन सभी ने कभी इस सामान्य से तथ्य पर गौर नहीं किया कि जलाशयों में जलस्तर का उतार-चढ़ाव आम होता है। इसलिए जलाशय के न्यूनतम स्तर पर भी इंटेकवेल में पानी पहुँचाने का प्रबंध किया जाना चाहिए था।

बात थोड़ी पुरानी है। कस्बे में जलप्रदाय योजना के सुचारु संचालन के बावजूद 25 करोड़ रुपए की एक नई योजना को आगे बढ़ाया जा रहा था तब वर्ष 2012 में शहर की जलप्रदाय व्यवस्था पर शोध करने वाले एक शोधार्थी ने नगरपालिका के एक जिम्मेदार अधिकारी से नई योजना की जरुरत पर सवाल पूछा था। तब उस अधिकारी का जवाब था - योजना को छोड़िए, पैसा आ रहा है और पैसा किसे बुरा लगता है? समस्या के सही कारणों पर ध्यान देने के बजाय बिना जरुरत नई-नई योजनाएँ बनाने के पीछे का परम सत्य शायद यही एक छोटा सा वाक्य है।

आज हालत यह है कि बदवामी नागर मे पेयजल कि समस्या से निपटने के लिए नर्मदा जल कि तिसरी योजना के लिए भागदोड मची हुई है,जबकि समस्या कोई बड़ी नहीं है मात्र पुरानी दो योजनओ के पाइपो को नदी के अंदर आगे तक बढ़ाना है।

पक्षियों की सुध लेना दरअसल प्रकृति की सुध लेना है

हले एक गौरैया होती थी
एक आदमी होता था
लेकिन आदमी इतना ऊँचा उड़ा
कि गौरैया खो गई!
अजेय

ज़रा ठहरकर सोचिए। क्या आपको याद है कि आख़िरी बार आपने अपने घर के आँगन, छत, खिड़की या किसी पेड़ की डाल पर गौरैया को कब देखा था? शायद याद करने में थोड़ा समय लगे। एक समय था जब सुबह की शुरुआत मोबाइल के अलार्म से नहीं, बल्कि पक्षियों की चहचहाहट से होती थी। कोयल की कूक, गौरैया की फुदकन, कबूतरों की गुटरगूँ और मोर की पुकार हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा थे। प्रकृति और मनुष्य के बीच एक सहज संवाद था। लेकिन आज शहर बड़े हो गए हैं, इमारतें ऊँची हो गई हैं, सड़कें चौड़ी हो गई हैं, फिर भी कुछ कमी महसूस होती है। वह कमी है पक्षियों के अहसास की, उनके संगीत की और उस जीवंतता की जो वे हमारे जीवन में घोलते थे।

पक्षियों का प्रश्न सिर्फ पर्यावरण का प्रश्न नहीं है बल्कि यह हमारी संस्कृति, हमारी संवेदनशीलता, हमारी जीवनशैली और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य का प्रश्न भी है। यदि किसी समाज के जीवन से पक्षी धीरे-धीरे गायब होने लगें, तो यह केवल जैव विविधता की हानि नहीं होती, बल्कि यह संकेत होता है कि इन्सान प्रकृति से दूर होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम विकास और आधुनिकता की चर्चा के साथ-साथ पक्षियों की सुध भी लें।

पक्षी पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण जीवों में से हैं। वे प्रकृति के अदृश्य कर्मयोगी हैं। अनेक पक्षी पौधों के बीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं, जिससे जंगलों का विस्तार होता है। कई पक्षी कीटों को खाकर कृषि फसलों की रक्षा करते हैं। कुछ पक्षी परागण में सहायता करते हैं, जबकि गिद्ध जैसे पक्षी पर्यावरण को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैज्ञानिक मानते हैं कि पक्षियों की संख्या और विविधता किसी क्षेत्र के पर्यावरणीय स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण संकेतक होती है।

विश्व पर्यावरण दिवस

डॉ. मनीष जैसल

लेखक मीडिया प्राध्यापक हैं।

लेकिन पक्षियों का महत्व केवल वैज्ञानिक दृष्टि से नहीं समझा जा सकता। उनका मनुष्य के सामाजिक और भावनात्मक जीवन से भी गहरा संबंध है। गौरैया को देखें तो वह केवल एक छोटा पक्षी नहीं है। वह घर, परिवार और आत्मीयता का प्रतीक है। कबूतर शांति और सद्भाव का संदेश देता है। हंस विवेक और ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। सारस हमें निष्ठा और समर्पण की सीख देता है। कोयल प्रेम, संवेदनशीलता और मधुरता का प्रतीक है। मोर भारतीय संस्कृति में सौंदर्य, गौरव और उत्सव का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं गिद्ध हमें यह सिखाता है कि समाज में ऐसे कर्म भी महत्वपूर्ण हैं जो दिखाई नहीं देते, लेकिन जिनके बिना व्यवस्था नहीं चल सकती।

दरअसल, मनुष्य ने अपने अनेक सामाजिक मूल्य पक्षियों को देखकर ही सीखे हैं। एक साथ उड़ते पक्षी हमें सहयोग का महत्व बताते हैं। अपने बच्चों को दाना खिलाते पक्षी हमें जिम्मेदारी का अर्थ समझाते हैं। लंबी यात्राएँ करने वाले प्रवासी पक्षी धैर्य, अनुशासन और सामूहिकता का पाठ पढ़ाते हैं। शायद यही कारण है कि दुनिया की लगभग हर सभ्यता में पक्षियों को सम्मान और आदर मिला है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में तो पक्षियों का स्थान और भी विशिष्ट है। हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों और लोककथाओं में पक्षियों का बार-बार उल्लेख मिलता है। गरुड़ शक्ति और साहस के प्रतीक हैं। हंस ज्ञान और विवेक का प्रतिनिधित्व करता है। भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय का वाहन मोर है, जबकि माता सरस्वती के साथ हंस का संबंध ज्ञान की पवित्रता को दर्शाता है। रामायण में जटायु केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि कर्तव्य, साहस और त्याग का जीवंत उदाहरण है, जिसने अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया। पंचतंत्र और जातक कथाओं में पक्षियों के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी गई है। हमारे पूर्वज पक्षियों को प्रकृति के साथी मानते थे, इसलिए घरों की छतों पर दाना डालना, तालाबों के किनारे जल की व्यवस्था करना और पेड़ों को सुरक्षित रखना सामाजिक संस्कृति का हिस्सा था।

भारतीय दर्शन का मूल मंत्र वसुधैव कुटुम्बकम् केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है। इसका अर्थ है कि पूरी पृथ्वी एक परिवार है। इस परिवार में पशु, पक्षी, पेड़-पौधे और मनुष्य सभी शामिल हैं। दुर्भाग्य से आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यह भावना कमजोर पड़ती जा रही है। हम अपने घरों को सुंदर बनाने में लगे हैं, लेकिन उन जीवों के लिए जगह नहीं छोड़ रहे जो सदियों से हमारे साथ रहते आए हैं।

दुनिया के कई देशों ने पक्षियों के महत्व को समझते हुए उन्हें अपनी नीतियों और सामाजिक संस्कृति का हिस्सा बनाया है। ब्रिटेन में लाखों लोग हर वर्ष अपने आसपास दिखने वाले पक्षियों का रिकॉर्ड रखते हैं। अमेरिका में प्रवासी पक्षियों की सुरक्षा के लिए विशेष कानून बनाए गए हैं। जापान में सारस को शांति और दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। यूरोप के कई देशों में नई इमारतों के निर्माण के समय पक्षियों के लिए कृत्रिम घोंसलों की व्यवस्था की जाती है। जर्मनी और नीदरलैंड में अनेक परिवार नियमित रूप से पक्षियों के लिए पानी और भोजन की व्यवस्था करते हैं। इन देशों ने यह समझ लिया है कि पक्षियों का संरक्षण केवल पर्यावरण की रक्षा नहीं, बल्कि मानवीय सभ्यता को संवेदनशील बनाए रखने का माध्यम भी है।

दुर्भाग्य से दुनिया भर में पक्षियों की स्थिति चिंताजनक होती जा रही है। अनेक अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के अनुसार विश्व की लगभग आधी पक्षी प्रजातियों की आबादी में गिरावट दर्ज की जा रही है। जंगलों का विनाश, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अवैध शिकार और शहरीकरण इसके प्रमुख कारण

पक्षियों का हमारे जीवन और आजीविका से भी सीधा संबंध है। किसान जानते हैं कि अनेक पक्षी खेतों में हानिकारक कीटों को खाकर फसलों की रक्षा करते हैं। उल्लू और अन्य शिकारी पक्षी चूहों की संख्या नियंत्रित करते हैं। यदि ये पक्षी न हों तो किसानों को अधिक मात्रा में रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग करना पड़ेगा। अनेक वृक्षों और वनस्पतियों का विस्तार पक्षियों द्वारा फैलाए गए बीजों के कारण ही संभव हो पाता है।

पक्षी प्रकृति के सबसे विश्वसनीय संदेशवाहकों में भी हैं। मौसम विज्ञान के आधुनिक उपकरण आने से बहुत पहले हमारे गांवों में लोग पक्षियों के व्यवहार को देखकर मौसम का अनुमान लगाते थे। कोयल की आवाज़ वसंत और ग्रीष्म ऋतु के आगमन का संकेत मानी जाती थी। मोर का नृत्य वर्षा की आहट समझा जाता था। साइबेरिया और मध्य एशिया से आने वाले प्रवासी पक्षियों का भारत पहुँचना सर्दियों के आगमन का संकेत माना जाता था। किसान पक्षियों की गतिविधियों को देखकर खेती से जुड़े निर्णय लेते थे। आज विज्ञान भी स्वीकार करता है कि पक्षी मौसम और पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं। वे प्रकृति में होने वाले सूक्ष्म बदलावों को मनुष्य से पहले महसूस कर लेते हैं।

भारतीय लोकजीवन में शायद ही कोई ऐसा मौसम हो जो किसी पक्षी से जुड़ा न हो। सावन के गीतों में मोर है, फागुन में कोयल है, कार्तिक में हंस है और सर्दियों में प्रवासी पक्षियों का स्वागत है। लोकगीतों, कहावतों और कविताओं में पक्षी केवल पात्र नहीं हैं, बल्कि भावनाओं के वाहक हैं। विरहिणी का संदेश ले जाने वाला पक्षी हो या वर्षा का समाचार देने वाला मोर, भारतीय लोक संस्कृति ने पक्षियों को हमेशा सम्मान दिया है।

जिस प्रकार हम अपने बच्चों को स्वच्छता और यातायात के नियम सिखाते हैं, उसी प्रकार उन्हें प्रकृति और पक्षियों के प्रति संवेदनशील बनाना भी आवश्यक है। विद्यालयों में स्थानीय पक्षियों की पहचान से जुड़े कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। मोहल्लों में पक्षियों के लिए जलपात्र रखे जा सकते हैं। स्थानीय और देशी वृक्षों का रोपण बढ़ाया जा सकता है। छतों और बालकनियों में छोटे-छोटे घोंसले लगाए जा सकते हैं। ये छोटे कदम मिलकर बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

यदि आने वाली पीढ़ियाँ केवल पुस्तकों और मोबाइल स्क्रीन पर पक्षियों को देखेंगी, तो यह हमारी सबसे बड़ी विफलताओं में से एक होगी। हमें ऐसा भारत बनाना है जहाँ सुबह फिर से पक्षियों की आवाज़ों से जागे, जहाँ बच्चों की पहचान केवल डिजिटल दुनिया से नहीं, बल्कि प्रकृति की जीवंत दुनिया से भी हो, और जहाँ मनुष्य यह समझ सके कि पृथ्वी पर उसका अस्तित्व अन्य जीवों के साथ मिलकर ही सार्थक है।

पक्षियों की सुध लेना दरअसल प्रकृति की सुध लेना है, और प्रकृति की सुध लेना अपने भविष्य की रक्षा करना है। इसलिए जब अगली बार कोई गौरैया आपकी खिड़की पर आकर बैठे, कोई कबूतर आपकी छत पर उतर आए या कोई कोयल किसी पेड़ पर गाने लगे, तो उसे केवल एक पक्षी की तरह मत देखिए। उसे उस जीवित संसार के प्रतिनिधि की तरह देखिए, जो हमें हर दिन यह याद दिलाता है कि जीवन केवल मनुष्यों का नहीं, बल्कि सभी प्राणियों का साझा उत्सव है। यही भावना एक संवेदनशील समाज और एक समृद्ध भविष्य की आधारशिला बन सकती है।

समान नागरिक संहिता के अध्ययन एवं परीक्षण के लिए गठित उच्च स्तरीय समिति की बैठक हुई

यूसीसी के संबंध में जनप्रतिनिधिगणों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों, शांति समिति के सदस्यगणों, पत्रकारगणों एवं प्रबुद्ध नागरिकों से सुझाव प्राप्त किए

धार। समान नागरिक संहिता के अध्ययन एवं परीक्षण के लिए गठित उच्च स्तरीय समिति की बैठक धार के पीजी कॉलेज के ऑडिटोरियम हॉल में आयोजित की गई। बैठक में समिति के सदस्य डॉ गोपाल शर्मा द्वारा विभिन्न सामाजिक, विधिक एवं प्रशासनिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने समान नागरिक संहिता के संभावित स्वरूप, विभिन्न राज्यों के अनुभव, सामाजिक समरसता तथा नागरिक अधिकारों से जुड़े विषयों पर अपने विचार रखे। बैठक में जनप्रतिनिधिगणों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, शांति समिति के सदस्यगणों, पत्रकारगणों एवं प्रबुद्ध नागरिकों से सुझाव भी प्राप्त किए गये।

समिति सदस्य डॉ गोपाल शर्मा ने पारिवारिक कानूनों, महिलाओं के अधिकार, सामाजिक न्याय एवं संवैधानिक प्रावधानों के संबंध में सुझावों पर चर्चा की। उन्होंने आगामी चरणों में नागरिकों से संवाद एवं सुझाव प्राप्त करने के लिए ucc.mp.gov.in पोर्टल की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समान नागरिक संहिता के संबंध में सुझाव ucc.mp.gov.in पोर्टल पर भेज सकते है। संविधान में समानता के लिए यूसीसी लाने का प्रस्ताव है। इसी के लिए आज विचार विमर्श हो रहा है। कुछ प्रदेशो में पूर्व में यूसीसी लागू हो गया है। प्रदेश सरकार चाहती है कि यूसीसी लागू करने से पूर्व नागरिकों के सुझाव लिये जाये। यूसीसी का केन्द्र बिन्दु परिवार है।

डॉ गोपाल शर्मा ने कहा कि पारिवारिक संबंधो से ताल्लुकात रखने वाले जो कानून है, वो समान नागरिक संहिता के परिधि में आते है। मिसाल के तौर पर विवाह, विवाह विच्छेद, भरण पोषण, उत्तराधिकार, लिविंग है। हम सभी जानते है कि परंपरागत रूप से हमारे देश में विभिन्न प्रकार के धर्म समुदायों के लिए विभिन्न प्रकार के पारिवारिक लॉ लागू है। आजादी के बाद इनमें से कुछ कानूनों को सुधार करने की कोशिश की गई, लेकिन अभी भी बहुत से विषय ऐसे है जिनको सुधार नहीं किया गया है, जो परंपरागत रीति रिवाजों से चलते है।

समिति सदस्य शोभा पैठणकर ने यूसीसी के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि कोई भी कार्य सरकार अकेले नहीं कर सकती। उन्होंने कहा कि अनेकता में एकता हमारी पहचान है, सभी को मिलकर कार्य करना होगा। समिति सभी जिलों में जाकर सुझाव ले रही हैं। सुझावों के आधार पर ड्राफ्ट तैयार होगा।

बैठक में कलेक्टर राजीव रंजन मीना, पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक चौधरी, प्रशासनिक अधिकारीगण, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, शांति समिति के सदस्यगण, पत्रकारगण, प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित रहे।

36वें ग्रीष्मकालीन खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का भव्य समापन

धार। धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन, धार जिला स्पोर्ट्स एंड कल्चरल सोसायटी, योग आयोग तथा धार जिला बैडमिंटन एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में स्वर्गीय अरविंद जी काशिव (वरिष्ठ पत्रकार) एवं स्वर्गीय संदीप जी करालें (वरिष्ठ समाजसेवी) की स्मृति में आयोजित 36वें ग्रीष्मकालीन खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि विजय बहादुर सिंह नन्हें भैय्य÷ (धार) रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजेन्द्र सिंह चौहान ने की तथा विशेष अतिथि के रूप में पंकज खत्री, पंकज नाडकर उपस्थित रहे।

यह प्रशिक्षण शिविर धार पब्लिक स्कूल के खेल मैदान पर आयोजित किया गया, जिसमें क्रिकेट, कराटे, ताइक्वांडो, फिजिकल एक्टिविटीज एवं फिटनेस ट्रेनिंग सहित विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया। शिविर का उद्देश्य बच्चों एवं युवाओं की खेल प्रतिभाओं को निखारना तथा उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से सशक्त बनाना था। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा महाराज स्वर्गीय हेमेंद्र सिंह जी पवार, स्वर्गीय अरविंद जी काशिव एवं स्वर्गीय संदीप जी करालें के चित्रों पर माल्यार्पण कर किया गया।

मुख्य अतिथियों का स्वागत धार डिस्ट्रिक्ट कल्चरल सोसायटी के अध्यक्ष धीरेन्द्र दिघे द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। अन्य अतिथियों का स्वागत योग गुरु जगदीश शर्मा, डिंपल परमार एवं प्रदीप जोशी द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त प्रमोद शर्मा, अम्बालाल पाटीदार, कपिल यादव, विजय सोलंकी, राम सोलंकी एवं श्री कुशल शर्मा ने भी अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं स्वागत भाषण योग गुरु जगदीश शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया। अतिथियों को स्मृति-चिन्ह प्रदीप जोशी ÷कीका भाई÷ द्वारा भेंट किए गए। सभी प्रशिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। शिविर में भाग लेने वाले सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिन्ह प्रदान कर उनके उत्साहवर्धन किया गया। सफल संचालन एवं आभार प्रदर्शन रामगोपाल शर्मा ÷गुरूजी÷ द्वारा किया गया।

समापन समारोह में खेल, स्वास्थ्य एवं योग के क्षेत्र से जुड़े गणमान्य नागरिकों, प्रशिक्षकों, अभिभावकों एवं बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति रही।

ग्राम पंचायत सचिव पर हितग्राहियों की अनदेखी एवं भ्रष्टाचार का आरोप, आवेदन दिया

सोहागपुर। आदिवासी ग्राम पंचायत गोड़ीखेरीमाल के सचिव लखन मेहरा द्वारा हितग्राहियों का कोई काम न करने , ग्राम सभा की सूचना ग्रामवासियों को न देने एवंमुख्यालय पर उपस्थित न रहने का आरोप ग्राम पंचायत गोड़ीखेरीमाल के पंचों एवं ग्रामवासियों ने लगाया है। इस संबंध में एक आवेदन दिया है।। इस आवेदन में आरोप लगाया गया है कि ग्राम पंचायत गोड़ीखेरीमाल के सचिव लखनलाल मेहरा द्वारा ग्राम पंचायत हितग्राहियों के कोई काम नहीं करता है और न ही समय पर पंचायत मुख्यालय पर उपस्थित रहते हैं। ज्ञापन मुख्य आरोपी यह लगाया गया है कि दिनांक 26. जनवरी 15 अगस्त 2 अक्टूबर, जैसे राष्ट्रीय उत्सव में बड़ी ग्राम सभा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर होना चाहिए । वहीं ग्राम सभा नहीं की जाती है। आवेदन में सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि सचिव द्वारा मन से ग्राम सभा के प्रस्ताव लिखकर ग्रामवासियों के पंचो के हस्ताक्षर करा लिए जाते है। इससे ग्राम पंचायत में होने वाले कार्यो की कोई जानकारी नहीं रहती है ।हम सभी ग्रामवासी आदिवासी समाज से आते हैं। , शिक्षित न होने के कारण सचिव लखनलाल हमें हर तरह से गुमराह करता रहता है। हमारे कोई भी कार्य ग्राम पंचायत में नहीं किए जाते है। ग्रामवासियों के वन अधिकारी पट्टे का प्रस्ताव आज दिनांक तक नहीं लिए गए है। उक्त पट्टे की मांग ग्रामवासियों लम्बे समय से लगातार शासन से की जा रही है।जिसमें ग्राम पंचायत का प्रस्ताव लगना अनिवार्य है। लेकिन सचिव लखलनलाल मेहरा किसी भी हितग्राही का प्रस्ताव ग्राम पंचायत में नहीं लिया गया है। इससे हम आठ हितग्राही पट्टे की प्रकिया से वंचित हैं। हमें आज तक पट्टे प्रदान नहीं किए गए है। जब भी हम सचिव महोदय से इस प्रस्ताव के संबंध में हितग्राही बात करते है । उसके द्वारा ग्रामवासियो को सिर्फ आश्वासन दिया जाता है। इस आवेदन में पंचायत में घोर भ्रष्टाचार निर्माण कार्य, नाली, सड़क पंचायत भवन अस्पताल, एवं शमशान घाट जैसे करोड़ो के काम में गुणवत्ताविहीन कार्य करने का आरोप लगाया गया है। आवेदन में लिखित है कि वर्तमान में श्मशान घाट की राशि आई है। लेकिन श्मशान घाट नहीं बनाया गया है। इस आवेदन में लिखित समस्त कार्यों की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की गई है।इस आवेदन में भागीरथ, अमरसिंह, भूरेलाल , पोहप सिंह आदि आदिवासी के हस्ताक्षर हैं।

शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है,जिस डाल पर बैठे हो,वह टूट भी सकती है शायर बशीर बद्र को दी श्रद्धांजलि

सोहागपुर। पलकमती साहित्य परिषद ने पद्म विभूषण से सम्मानित शायर डॉक्टर बशीर बद्र के निधन उपरांत पूर्णेन्दु परिसर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। जिसमें समाजसेवियों, जनप्रतिनिधियों, नेताओं, कवियों ने विख्यात शायर बशीर बद्र को श्रद्धांजलि प्रदान की गई। इस गरिमामय कार्यक्रम में कविवर बशीर बद्र की शास्त्रियों को स्थानीय कवियों ने पढ़ी। इसी अवसर उपस्थित समाजसेवियों, नेताओं एवं जनप्रतिनिधियों ने विख्यात शायर बशीर बद्र साहब की ग़ज़ल, शायरी एवं उनकी उल्लेखनीय बातों को सारगर्भित उद्बोधन दिया। शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है जिस डाल पर बैठे हो वह टूट भी सकती है।

एम्स स्थित करुणेश्वरी सेवा केंद्र के 8 वर्ष पूर्ण

गुरुदेव श्री शांडिल्य महाराज ने किया भोजन वितरण

भोपाल। एम्स भोपाल परिसर में संचालित करुणेश्वरी सेवा केंद्र के 8 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर करूणाधाम आश्रम के पीठाधीश्वर गुरूदेव श्री सुदेश जी शांडिल्य महाराज ने परिवार सहित विश्रामालय पहुंचकर मरीजों के परिजनों के बीच भोजन वितरण किया। कार्यक्रम के दौरान सेवा कार्यों को याद करते हुए बताया गया कि करुणाधाम का यह विश्रामालय लगभग 11 हजार वर्ग फीट क्षेत्र में निर्मित है। यहां मरीजों के परिजनों के लिए रहने एवं दिन में तीन समय भोजन की निःशुल्क व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है।

बालाजीपुरम के गेट पर गुंडागर्दी, विरोध में मंदिर अनिश्चितकालीन के लिए बंद

पुलिस प्रशासन से आरोपियों की गिरफ्तारी और स्थायी सुरक्षा की मांग

बैतूल। बालाजीपुरम मंदिर परिसर में गुरुवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब मंदिर के गेट के बाजू में जूता स्टैंड पर तैनात कर्मचारियों और श्रद्धालुओं के साथ कुछ लोगों ने विवाद के बाद जानलेवा हमला कर दिया। इस घटना के विरोध में बालाजीपुरम मंदिर प्रबंधन ने मंदिर को अनिश्चितकालीन के लिए बंद करने की घोषणा की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, फरियादी सुनील जांगड़े (उम्र 32 वर्ष, निवासी ग्राम बयावाड़ी), जो बालाजीपुरम मंदिर में जूता स्टैंड पर काम करता है, ने पुलिस में लिखित शिकायत दर्ज कराई, कि आज गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे की बात है। कुछ दर्शनार्थी मंदिर में दर्शन करने के बाद वापस लौटे और अपने जूते-चप्पल मांगने लगे। जब सुनील जांगड़े ने नियमानुसार तय सुरक्षा शुल्क की उनसे मांग की, तो वे लोग अचानक उग्र हो गए और गंदी-गंदी गालियां देने लगे। विवाद इतना बढ़ा कि आरोपियों ने सुनील के साथ मारपीट शुरू कर दी। आरोपियों में से एक ने आवाज लगाई, निहाल मार इसको..., जिसके बाद सुनील की दाहिनी आंख के पास, दाहिने हाथ और पैर पर गंभीर चोटें आईं।

चाकू और डंडे से किया जानलेवा हमला- चीख-पुकार सुनकर जब सुनील का साथी मुकेश भारद्वाज बीच-बचाव करने के लिए आगे आया, तो हमलावरों ने उस पर भी लाठी-डंडों और हाथ में ली हुई धारदार कटार से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। इस हमले में मुकेश के सिर पर गहरा घाव हो गया और खून बहने लगा। इसके अलावा मुकेश के दाहिने कंधे और बाएं गाल पर भी गंभीर चोटें आई हैं। इसके बाद मंदिर परिसर में मौजूद अन्य सहयोगियों–भूपेन्द्र सिंह, नरेन्द्र सिंह, गोलू यादव और शुभम गोपते ने जब बीच-बचाव का प्रयास किया, तो हमलावर वहां से भाग खड़े हुए। हालांकि कुछ ही देर बाद आरोपी अपने साथ अन्य लोगों की भारी भीड़ लेकर वापस लौटे और मंदिर परिसर में दोबारा गाली-गलौज कर उत्पाद मचाया।

जान से मारने की दी धमकी, पुलिस जांच में जुटी

जाते-जाते हमलावरों ने सरेआम पीड़ितों को धमकी देते हुए कहा कि आज तो छोड़ दिया है, दोबारा मिले तो जान से मार देंगे। इस पूरी हिंसक घटना को आसपास के स्थानीय दुकानदारों और चश्मदीदों ने भी देखा है। फरियादी की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश और वैधानिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

विरोध में मंदिर बंद

गुंडागर्दी के विरोध में बालाजीपुरम मंदिर प्रबंधन ने तत्काल प्रभाव से मंदिर अनिश्चित काल के लिए बंद करने की घोषणा की है। बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने इस घटना पर कड़ी नाराजगी और दुख जताते हुए कहा कि श्रद्धालुओं और मंदिर सेवक से नृशंस जानलेवा मारपीट गलत है। उन्होंने पुरानी घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि यहां बार बार निवेदन के बाद भी पुलिस प्रशासन के व्दारा सुरक्षा की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं की गई। मंदिर से जुड़े सभी श्रद्धालुओं ने पुलिस प्रशासन से तुरंत आरोपियों को गिरफ्तार करने, उनके अवैध धंधों को बंद कराने और मंदिर में स्थायी सुरक्षा चौकी बनाने की मांग की है।

चलते आयशर ट्रक में भड़की आग, फायर टीम की तत्परता से टला बड़ा हादसा

बैतूल/मुलताई। मुलताई क्षैत्र के थाना साईखेड़ा के ग्राम उमनपेठ में गुरुवार तड़के एक चलते आयशर ट्रक में अचानक आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। समय रहते फायर ब्रिगेड की टीम के पहुंचने और तत्परता से किए गए राहत एवं बचाव कार्य के कारण एक बड़ा हादसा टल गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ट्रक क्रमांक एमएच 40 सीडी 4982 तिगांव से साईखेड़ा की ओर गोभी भरने जा रहा था। गुरुवार सुबह करीब 3.05 बजे ग्राम उमनपेठ के पास ट्रक के अगले हिस्से में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग बढने लगी, जिससे चालक और आसपास मौजूद लोगों में हडक़ंप मच गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आग ट्रक के सामने वाले हिस्से में लगी थी और तेजी से फैल रही थी। यदि आग डीजल टैंक तक पहुंच जाती तो स्थिति बेहद गंभीर हो सकती थी और बड़ा नुकसान होने की आशंका थी। घटना की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड के कर्मचारी मनोज कवड़े, दीपक अहिरवार एवं विजय बड़घरे तत्काल मौके पर पहुंचे। टीम ने बिना समय गंवाए आग बुझाने का अभियान शुरू किया और कुछ ही देर में आग पर नियंत्रण पा लिया। उनकी त्वरित कार्रवाई के चलते ट्रक को अधिक क्षति होने से बचा लिया गया।

शादी समारोह में चाकूबाजी के तीन आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। शादी समारोह के दौरान चाकूबाजी, मारपीट और अड़ीबाजी के मामले में कोतवाली पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह घटना 28 मई 2026 को हुई थी। पुलिस के अनुसार, ग्राम हिवरखेड़ी निवासी सतीश धुर्वे (23) ने 29 मई 2026 को कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि 28 मई को डूडा बोरगांव में एक शादी समारोह में रोहित मर्सकोले, अलकेश धुर्वे, गोपाल धुर्वे और उनके साथियों ने डीजे पर नाचने और शराब पीने के लिए पैसे मांगने को लेकर विवाद किया। आरोपियों ने गाली-गलौज और मारपीट करते हुए चाकू से हमला कर सतीश को घायल कर दिया था। शिकायत के आधार पर कोतवाली थाने में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत दर्ज कर जांच शुरू की गई। घटना के बाद से आरोपी फरार थे, जिनकी तलाश पुलिस लगातार कर रही थी। 3 जून को पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि आरोपी पॉलीटेक्निक कॉलेज क्षेत्र में घूम रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने घेराबंदी कर तीनों आरोपियों को हिरासत में ले लिया। पूछताछ में आरोपियों ने घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार कर ली। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में झाड़ेगांव निवासी रोहित मर्सकोले (23), अलकेश धुर्वे (31) और गोपाल धुर्वे (21) शामिल हैं। तीनों को 3 जून को न्यायालय में पेश किया गया। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक देवकरण डेहरिया, उप निरीक्षक भानुप्रताप बुंदेला, सहायक उप निरीक्षक अजय अजनेरिया, प्रधान आरक्षक अभिजीत खलतकर, दीवान सिंह और आरक्षक विशाल राजपूत की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पर्यावरण दिवस पर विशेष

शिप्रा शुद्धिकरण शिप्रा एक्शन प्लान से होगा बड़ा परिवर्तन : पर्यावरणविद् सचिन दवे

धार। मोक्षदायिनी शिप्रा प्राचीन नदी है। जब सनातन काल में राहु अमृत कलश लेकर भागा था और भगवान विष्णु उसका पीछा कर रहे थे । तब घड़े से अमृत की बुंदें शिप्रा में गिरी थी और तभी से शिप्रा तट उज्जैन में कुंभ लगता है। शिप्रा नदी में वर्षों से प्रदूषण बढ़ रहा है। सालों पहले क्षिप्रा प्रवाहमान थी और प्रदूषण मुक्त थीं । उज्जैन एवं आसपास के ग्रामीण जनता पीने के पानी के लिये क्षिप्रा के जल का उपयोग करते थे किन्तु वर्तमान समय में शिप्रा के जल में प्रदूषण बढ़ रहा हैं

शिप्रा का उद्गम इंदौर जिलें के देवगुड़ाडिया ग्राम के समीप शिप्रा मंदिर से हुआ है। जहाँ एक कुंड भी है। मान्यता है कि इस कुंड में शिप्रा का उद्गम हुआ है। यहाँ से लेकर शिप्रा इंदौर, देवास, उज्जैन एवं रतलाम जिले के आलोट तहसील के क्षिपावरा स्थान पर समाप्त होती है।

2016 सिंहस्थ महाकुंभ में जब पर्यावरण कुंभ और प्लास्टिक मुक्त सिंहस्थ का अभियान चलाया था वही एक संकल्प लिया की शिप्रा को आने वाले समय में प्रदूषण मुक्त कर के शुद्धिकरण का अभियान करेंगे उस संकल्प को सार्थक करने हेतु पिछले अनेक सालों से शिप्रा शुद्धिकरण को लेकर कई रचनात्मक कार्य प्रारंभ किया। इन्हीं रचनात्मक कार्यों में शिप्रा नदी के किनारे पौधारोपण , शिप्रा के घाटों पर युवाओं को लेकर सफाई अभियान,मां शिप्रा अध्ययन यात्रा, शिप्रा किनारे बसे गांव व शहर में शिप्रा शुद्धिकरण को लेकर जन जागरण का कार्यक्रम किया।

नर्मदा , शिप्रा प्रदूषण को लेकर एनजीटी याचिकाकर्ता विगत 22 वर्ष से पर्यावरण एवं शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय- पूर्व एबीवीपी केंद्रीय कार्य समिति सदस्य,पूर्व एस एफ डी राष्ट्रीय प्रमुख सचिन दवे ने कहा कि शिप्रा के पानी का सैंपलिंग कराकर पानी के शुद्धता की जांच करना शिप्रा के नजदीक उद्योग की विजिट करके इंडस्ट्री में से निकलने वाला प्रदूषित पानी शिप्रा में ना मिले इस हेतु इंडस्ट्री में जाकर निरीक्षण करना पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के अधिकारियों को साथ में लेकर निरीक्षण करवाना। इस प्रकार अनेक सार्थक कार्य किये, इसके अतिरिक्त सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट को निरीक्षण करके ट्रीटमेंट प्लांट से निकालने वाला पानी भी प्रदूषित पानी न रहे उसे नदी मे सीधा ना छोड़ा जाए लंबे समय तक इस कार्य को करने के बाद अनेक सकारात्मक परिणाम निकले हैं ।

शिप्रा के किनारे जन जागरण सभी स्तर पर हुआ है शिप्रा एक्शन प्लान बना प्रशासनिक लोगों में भी जागृति आई है जनमानस में भी जागृति आई है सरकार भी संजीदा है और सभी के सार्थक प्रयास से आने वाले सिहस्थ में हम शिप्रा के जल को प्रदूषण मुक्त करने के संकल्प में सफल हो रहे हैं।

जन स्वास्थ्य अभियान का राष्ट्रीय सम्मेलन आज

भोपाल। जन स्वास्थ्य अभियान इंडिया द्वारा 5 जून को व्यावसायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन गांधी भवन भोपाल में सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक किया जा रहा है। इसमें व्यसायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर कार्य करने वाले 12 राज्यों के प्रमुख लोग मुद्दे पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हो रहे हैं। इस आयोजन में मुख्य रूप से भारत में व्यावसायिक स्वास्थ्य, कानून, नीतियाँ, संघर्ष और चुनौतियाँ और पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इन विषयों पर चर्चा के लिए विभिन्न विषय विशेषज्ञ उपस्थित होंगे। इस कार्यक्रम में व्यावसायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य से विभिन्न प्रकार से प्रभावित समुदायों के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे। व्यावसायिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर चर्चा के साथ ही देश के इन विभिन्न मुद्दों पर व्यापक और असरदार तरीके से प्रयास करने हेतु विस्तृत कार्ययोजना भी बनाई जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

विकास पोर्टल के माध्यम से सुगम होगी खाद वितरण व्यवस्था

● जिले की ग्राम पंचायतों में दिया गया प्रशिक्षण

अशोक नगर (निप्र)। कलेक्टर श्री साकेत मालवीय के निर्देशानुसार जिला पंचायत अशोकनगर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री राजेश कुमार जैन के मार्गदर्शन में मंगलवार को जिले की ग्राम पंचायतों में ई-विकास (वितरण एवं कृषि उर्वरक आपूर्ति समाधान) प्रणाली का व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस विशेष अभियान के तहत जनपद पंचायत अशोकनगर की ग्राम पंचायत गता शाढ़ौरा, चिरौली, दियाधरी मयापुर, सहोदरी, मसीदपुर सहित विभिन्न पंचायतों में किसानों को खाद प्राप्ति के लिए ई-टोकन जनरेट करने की तकनीकी व व्यावहारिक जानकारी दी गई।। किसानों को सुगमतापूर्वक और शत-प्रतिशत पारदर्शिता के साथ उर्वरक उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह नई व्यवस्था लागू की गई है। किसानों को अवगत कराया गया कि वे अपनी ग्राम पंचायत में स्थित कॉमन सर्विस सेंटर के माध्यम से मात्र 15 का सेवा शुल्क देकर अपना ई-टोकन आसानी से पंजीकृत करवा सकते हैं। ग्राम स्तर पर सरपंचों को इस ई-टोकन प्रणाली का मुख्य नियंत्रक बनाया गया है, जिनकी देखरेख में पूरी प्रक्रिया संचालित की जा रही है। कॉमन सर्विस सेंटर संचालकों को रोजाना कम से कम 50 से 60 किसानों को ई-टोकन हेतु पंजीकृत करने और प्रशिक्षित करने का लक्ष्य दिया गया है।। टोकन जनरेट होने के बाद किसानों को मार्कफेड के डबल लॉकर, सहकारी समितियों या निजी डीलरों के पास उपलब्ध खाद के स्टॉक के अनुसार तत्काल उर्वरक काउंटर से वितरित किया जाएगा इस प्रशिक्षण और नई व्यवस्था की मॉनिटरिंग के लिए अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) को नोडल अधिकारी तथा जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है ।उक्त प्रशिक्षण से क्षेत्र के किसानों को खाद के लिए लंबी लाइनों से मुक्ति मिलेगी और पूरी व्यवस्था डिजिटल व पारदर्शी बनेगी।

ग्राम शाजापुर में राजस्व दल ने भूमि को कराई अतिक्रमण से मुक्त

अशोक नगर (निप्र)। कलेक्टर श्री साकेत मालवीय के निर्देशन एवं अनुविभागीय अधिकारी के मार्गदर्शन में एवं न्यायालय तहसीलदार तहसील नईसरायं के राजस्व प्रकरण क्रमांक 0021/अ-70/2025-26 आदेश दिनांक 12.01.2026 के परिपालन में एवं कार्यालय तहसीलदार के आदेश क/री-1/2026/555 नईसरांय दिनांक 27.05.2026 के अनुपालन में आज दिनांक 02.06.2026 को राजस्व विभाग द्वारा ग्राम शाजापुर स्थित आवेदक पुरन पुत्र हल्का जाति ढीमर निवासी ग्राम शाजापुर के सर्वे क्रमांक 267 रकबा 0.606हे0 भूमि पर से अतिक्रमाक जगदीश पुत्र मोकाम जाति सहरिया रकबा 0.052हे0, कल्ला पुत्र गुपला जाति ढीमर रकबा 0.031 हे0 एवं लक्ष्मण पुत्र हल्कूराम जाति पाल रकबा 0.102हे0 भूमि पर से अतिक्रमण किया गया था। राजस्व दल द्वारा मौके पर उपस्थित होकर अवैध अतिकामकों द्वारा किये गये अतिक्रमण को हटाकर आवेदक पूरन पुत्र हल्का जाति ढीमर निवासी ग्राम शाजापुर को मौका स्थल पर कब्जा सौंपा गया। उक्त भूमि की बाजारू कीमत लगभग 5 लाख रूपये है।

जिला मजिस्ट्रेट ने दो आदतन अपराधियों को किया जिला बदर

मुरैना (निप्र)। जिला मजिस्ट्रेट मुरैना श्री लोकेश कुमार जांगिड़ ने पुलिस अधीक्षक श्री धर्मराज मीणा के प्रस्ताव पर कार्रवाई करते हुए दो आदतन अपराधियों को जिला बदर करने के आदेश जारी किए हैं। इन दोनों व्यक्तियों के विरुद्ध जिले के विभिन्न थानों में अनेक आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। जिला मजिस्ट्रेट द्वारा यह कार्रवाई मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम, 1990 की धारा 3 सहपठित धारा 5 एवं 6 के अंतर्गत प्रदत शक्तियों का प्रयोग करते हुए की गई है। जिला बदर किए गए अपराधियों में थाना सरायछोला अंतर्गत ग्राम जैतपुर निवासी 55 वर्षीय रामनिवास पुत्र हरिकंठ गुर्जर तथा ग्राम कैमरा निवासी 46 वर्षीय साहब सिंह पुत्र ब्रखभान सिंह गुर्जर शामिल हैं। लोक व्यवस्था एवं जनसुरक्षा बनाए रखने तथा इन व्यक्तियों की आपराधिक एवं असामाजिक गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से जिला मजिस्ट्रेट ने आदेशित किया है कि दोनों अपराधी आगामी एक वर्ष की अवधि तक जिला मुरैना सहित इसके निकटवर्ती जिलों—ग्वालियर, भिण्ड, श्योपुर एवं शिवपुरी—की सीमाओं से बाहर रहेंगे।

● समूह से जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही महिलाएं

4 लाख का लोन लेकर लगाई आईसक्रीम फैक्ट्री, अब 10 लाख से अधिक का टर्नओवर

श्योपुर (निप्र)। कलेक्टर सुश्री शीला दाहिमा के मार्गदर्शन एवं सीईओ जिला पंचायत श्रीमती सौम्या आनंद के निर्देशन में एनआरएलएम अंतर्गत संचालित स्वसहायता समूह से जुडी महिलाएं आजीविका मूलक गतिविधियों को अपनाकर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है। समूह से जुडने के बाद इन महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में बदलाव आ रहा है। ऐसी ही कहानी है 4 ग्रामीण महिलाओं की जो एनआरएलएम अंतर्गत संचालित देवकी स्वसहायता समूह से जुडी हुई है, इन महिलाओं को 1 लाख रूपये समूह के कम्युनिटी इंवेस्टमेंट फंड तथा मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक कराहल से तीन लाख रूपये की सीसीएल राशि प्राप्त कर आदिवासी विकासखण्ड मुख्यालय कराहल में एक

आईसक्रीम फैक्ट्री स्थापित की, वर्ष 2022 में शुरू हुई इस फैक्ट्री में उन्होंने अपनी मेहनत और लग्नशीलता से इस गतिविधि को सफल बनाया है। आज उनका एक सीजन का कारोबार 10 से 15 लाख रूपये के बीच टर्नओवर कर रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री जी के आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश आत्मनिर्भर भारत के सपनों को साकार करने वाली इन उद्यमी महिलाओं ने आइसक्रीम यूनिट का संचालन कर यह महसूस कराया है कि महिलाएं भी सफल उद्यमी बन सकती हैं। समूह की सदस्य श्रीमती रामश्री कुशवाह, श्रीमती श्रीवती कुशवाह, श्रीमति सटर कुशवाह एवं श्रीमती ज्योति कुशवाह ने समूह के माध्यम से इसकी शुरूआत की, लगभग 4 साल की मेहनत से इन्होंने इस सफलता को हासिल किया है और प्रत्येक वर्ष 4 से 6 माह के एक सीजन में 4 से 5 लाख रूपये का लाभ अर्जित कर रही है। संकुल नोडल श्रीमती सोनिया परिहार ने बताया कि समूह के माध्यम से स्थापित इस आजीविकामूलक गतिविधि से फैक्ट्री की स्थापना करने वाली महिलाओं को तो लाभ मिल ही रहा है, बल्कि इनके द्वारा दो दर्जन से अधिक ग्रामीण युवाओं को भी रोजगार के अवसर प्रदान किये है।

आधुनिक तकनीक से खेती बनी मुनाफे का सौदा

● कलेक्टर ने प्रगतिशील किसान के नवाचारों को सराहा

▸▸ थाई पिंक अमरूद की बगिया से लेकर पेटेंट प्राप्त कृषि मशीन तक, कृषि एवं उद्यानिकी नवाचारों का किया अवलोकन

गुना (निप्र)। कलेक्टर श्री किशोर कुमार कन्याल ने बुधवार को चाचौड़ा विकासखंड के कृषि एवं उद्यानिकी नवाचारों का निरीक्षण कर किसानों को आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान उन्होंने ग्राम पीपलखेड़ी में कृष्णा स्व-सहायता समूह द्वारा संचालित 'एक बगिया मां के नाम' अभियान अंतर्गत विकसित 100 थाई पिंक अमरूद पौधों की बगिया का अवलोकन किया। बगिया की तार फेंसिंग एवं रखरखाव व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए उन्होंने इसकी सराहना की। विशेष बात यह है कि थाई पिंक अमरूद के पौधे कम समय में फल देना प्रारंभ कर देते हैं, जिससे किसानों को शीघ्र आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। इसके उपरांत कलेक्टर श्री कन्याल ने कुंभराज तहसील अंतर्गत ग्राम बड़ौद पहुंचकर प्रगतिशील उद्यानिकी किसान श्री गोविंद मीणा के खेत का भ्रमण किया तथा उनके द्वारा अपनाई जा रही आधुनिक सब्जी खेती एवं कृषि नवाचारों का अवलोकन किया। श्री गोविंद मीणा द्वारा लगभग 3.50 एकड़ क्षेत्र में टमाटर, टिंडा एवं खीरे की उन्नत खेती ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग एवं स्टैकिंग तकनीक के माध्यम से की जा रही है। आधुनिक तकनीकों के उपयोग से वे प्रति एकड़ लगभग 3.50 से 4 लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं, जो क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणादायक उदाहरण है। भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने किसान द्वारा विकसित एक अभिनव ट्रैक्टर चलित मशीन का भी निरीक्षण किया। यह मशीन एक साथ मल्चिंग बिछाने, बंड निर्माण एवं ड्रिप लाइन बिछाने का कार्य करती है। किसान के इस नवाचार को भारत सरकार से पेटेंट भी प्राप्त हो चुका है।

● पेयजल व्यवस्था एवं नगरीय निकायों के कार्यों की हुई समीक्षा

सभी नगरीय निकायों में वर्षा पूर्व नालों की सफाई कराई जाए: अर्पित वर्मा

शिवपुरी (निप्र)। बैठक में दिए सख्त निर्देशकलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा ने समस्त नगरीय निकायों के सीएमओ को वर्षा पूर्व सभी नालों की सफाई कराने के निर्देश दिए हैं। यदि कहीं अतिक्रमण है, तो अतिक्रमण हटाया जाए। कहीं भी कोई नया निर्माण अतिक्रमण करके ना किया जाए।

सभी सीएमओ यह सुनिश्चित करें।कलेक्टर श्री अर्पित वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिले के नगरीय निकायों के अध्यक्षों एवं समस्त मुख्य नगरपालिका अधिकारियों के साथ बैठक संपन्न हुई। बैठक में नगरीय निकायों में पेयजल की स्थिति, जल गंगा संवर्धन अभियान, प्रधानमंत्री आवास योजना , अमृत 2.0 और मानसून की तैयारियों पर विस्तृत चर्चा की गई।गुणवत्ता और भौतिक सत्यापनकलेक्टर श्री वर्मा ने निर्देशित किया कि निकाय स्तर पर होने वाले समस्त विकास कार्यों का अधिकारी स्वयं भौतिक सत्यापन करें। कार्यों की गुणवत्ता और समय-सीमा का पालन सुनिश्चित करना सीएमओ की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होगी।जर्जर इमारतों का चिन्हांकनकलेक्टर श्री वर्मा ने नागरिकों की सुरक्षा

के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए निर्देश दिए कि नगरीय सीमा के अंतर्गत स्थित सभी जर्जर भवनों का तत्काल चिन्हांकन किया जाए। ऐसी इमारतों को चिन्हित कर उन्हें हटाने या सुधारात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए, ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचा जा सके।यातायात व्यवस्था और समन्वयकलेक्टर श्री वर्मा ने निर्देश दिए कि सुगम यातायात के लिए नगरपालिका और यातायात पुलिस आपसी समन्वय के साथ काम करें।

नगरीय निकायों में रैन बसेरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए

रैन बसेरों की व्यवस्था बैठक में कलेक्टर ने बेसहारा और जरूरतमंद लोगों के लिए रैन बसेरों के निर्माण और संचालन को प्राथमिकता देने को कहा। उन्होंने निर्देश दिए कि नगरीय निकायों में रैन बसेरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए ताकि कोई भी व्यक्ति खुले में रहने को मजबूर न हो ।ठेकेदार को नोटिस जारी करने के निर्देशबैठक में पेयजल की समस्या को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर श्री वर्मा ने बैराड़ की समीक्षा करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि लाइन डिस्ट्रीब्यूशन और नल कनेक्शन कार्य की प्रगति सीएमओ देखें। यदि ठेकेदार कार्य में विलंब करता है, तो संबंधित सीएमओ उसका भुगतान न करें। ठेकेदार को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए हैं ।जलकुंभी हटाने के लिए निर्देशबैठक में पिछोर नगर परिषद अध्यक्ष ने बताया कि पिछोर में प्रमुख जल संरचना मोती सागर तालाब में अत्यधिक जलकुंभी है।

मुरैना में मनाया गया 'हीट एक्शन डे' लू एवं भीषण गर्मी से बचाव के दिए आवश्यक निर्देश

मुरैना (निप्र)। राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन एवं मानव स्वास्थय कार्यक्रम के अंतर्गत मंगलवार को जिला मुख्यालय मुरैना में 'हीट एक्शन डे' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थय अधिकारी डॉ. पदमेश उपाध्याय ने की। जिला कार्यालय सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य बढ़ते तापमान, भीषण गर्मी एवं लू (हीट वेव) के दुष्प्रभावों से आमजन को सुरक्षित रखने तथा स्वास्थय विभाग की तैयारियों की समीक्षा करना था। सीएमएचओ डॉ. पदमेश उपाध्याय ने कहा कि जिले में लगातार तापमान में वृद्धि हो रही है, जिससे जनस्वास्थय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में हीट स्ट्रोक के मामलों से निपटने के लिए स्वास्थय विभाग एवं जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। उन्होंने कहा कि बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं तथा अन्य संवेदनशील वर्गों को भीषण गर्मी से सुरक्षित रखना विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकता है। जिले के सभी प्राथमिक स्वास्थय केंद्र, सामुदायिक स्वास्थय केंद्र एवं जिला चिकित्सालय में लू से प्रभावित मरीजों के लिए विशेष बेड आरक्षित किए जाएं।

आमजन के लिए स्वास्थय सलाह

अस्पतालों में कूलर, पंखे एवं शीतल पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। सभी स्वास्थय संस्थाओं में ओआरएस पैकेट, जीवन रक्षक दवाइयों एवं आईवी फ्लूड्स की पर्याप्त उपलब्धता बनाए रखी जाए। आशा कार्यकर्ता, एएनएम एवं अन्य मैदानी स्वास्थय कर्मी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जनजागरूकता अभियान चलाकर लोगों को लू से बचाव के उपायों की जानकारी दें। आमजन के लिए स्वास्थय सलाह क्या करें पर्याप्त मात्रा में पानी, ओआरएस, छाछ एवं नींबू पानी का सेवन करें। बाहर निकलते समय सिर को टोपी, गमछे, सूती कपड़े या छाते से ढककर रखें। हल्के रंग के, ढीले एवं सूती वस्त्र पहनें। धूप में निकलने से पहले पर्याप्त भोजन एवं पानी का सेवन करें। क्या न करें दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे के बीच अनावश्यक रूप से बाहर न निकलें। अत्यधिक चाय, कॉफी एवं कैफीन युक्त पेय पदार्थों का सेवन न करें। बच्चों, बुजुर्गों एवं पालतू पशुओं को बंद वाहनों में अकेला न छोड़ें। तेज धूप में अत्यधिक शारीरिक श्रम करने से बचें।

शासकीय उचित मूल्य दुकानों पर अनियमित्तां मिलने पर हुई कार्यवाही

दतिया (निप्र)। अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) श्री लोकेन्द्र सिंह सरल द्वारा दतिया जिले में स्थापित विभिन्न शासकीय उचित मूल्य की दुकानों की जांच की गई। शासकीय उचित मूल्य दुकानों के निरीक्षण में गंभीर अनियमितताएं, राशन सामग्री के स्टॉक में भारी अंतर एवं वितरण में गड़बड़ियां पाए जाने पर कार्यवाही गई है।

अनुविभागीय अधिकारी द्वारा जिन शासकीय उचित मूल्य की दुकानों पर कार्यवाही की गई उनमें बड़ौनी वार्ड क्रमांक 04 एवं 15 की शासकीय उचित मूल्य दुकान (कोड 704023) में विक्रेता श्रीमती नीरज दुबे एवं सहायक विक्रेता नवनीत दुबे के कार्यकाल से संबंधित जांच में गेहूं, चावल, नमक एवं शक्कर की कुल 103.90 क्विंटल सामग्री कम पाई गई।

साथ ही कई हितग्राहियों ने आरोप लगाया कि उन्हें निर्धारित मात्रा से कम राशन दिया जाता था तथा शक्कर का वितरण नियमित रूप से नहीं किया जाता था। इस संबंध में दोनों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

खिलाड़ियों को नशे से दूरी हेतु किया जागृत

भिण्ड (निप्र)। म.प्र. खेल और युवा कल्याण विभाग के निर्देशानुसार तथा कलेक्टर भिण्ड एवं पुलिस अधीक्षक भिण्ड के मार्गदर्शन में आयोजित ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर 'आरोह' वर्ष 2026 के 30 वें दिन संचालक किशोरी स्पोर्ट्स क्लब प्रशिक्षक एवं प्रेरक तथा प्रशिक्षक मार्शल आर्ट्स सुश्री सत्या तोमर ने प्रातः शिविर में उपस्थित होकर समस्त प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षणार्थियों से परिचय प्राप्त किया और उन्हें नशे से दूरी बनाने हेतु खिलाडियों को बताया कि मादक पदार्थों (सिगरेट, बीडी, तंबाकू, गुटखा, शराब इत्यादि) से दूरी बनाने के साथ-साथ आज के समय में प्रचलित मोबाईल को चलाने, झूठ बोलने, अभद्र भाषा/व्यवहार भी एक प्रकार का नशा ही है,

इसलिये हमें खासकर इन चीजों से दूरी बनाना चाहिए। इसी प्रकार विकासखण्ड अटेर में श्री क्षत्रपाल सिंह तोमर के द्वारा किया गया और संचालित प्रशिक्षण शिविर का निरीक्षण थाना प्रभारी अटेर खो-खो, एथलेटिक्स एवं व्हॉलीवाल प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों से परिचय प्राप्त किया और उन्हें खेल की बारीकियों से अवगत कराया।

ग्राम पंचायत मसूरी में तालाब गहरीकरण व सौंदर्यीकरण हेतु किया गया श्रमदान

भिण्ड (निप्र)। जल संरक्षण शक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत जनपद पंचायत अटेर की ग्राम पंचायत मसूरी में आज बड़े स्तर पर तालाब गहरीकरण एवं सौंदर्यीकरण हेतु जन सहयोग से श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कलेक्टर भिण्ड व सीईओ जिला

पंचायत भिण्ड ने भी भाग लिया और उत्साह के साथ श्रमदान कर स्थानीय लोगों को प्रोत्साहित किया। कलेक्टर ने बताया कि तालाब गहरीकरण से जल संधारण क्षमता बढ़ेगी, भूजल स्तर सुधरेगा तथा सूखे के समय पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। साथ ही सौंदर्यीकरण से ग्राम का पर्यावरण व स्थानीय पर्यटन संवर्धन होगा। सीईओ जिला पंचायत ने कहा कि यह सक्रिय भागीदारी सतत विकास के लिए आवश्यक है और प्रशासन जनभागीदारी से गांवों में जल संरक्षण की कई परियोजनाएँ तेजी से लागू कर रहा है। कार्यक्रम में ग्राम वासियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रशासन ने ग्रामवासियों से निरंतर सहयोग की अपील की है ताकि जल संसाधनों का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

● निरीक्षण

कलेक्टर ने सानई गौशाला का किया निरीक्षण, बेहतर दुग्ध उत्पादन और स्वच्छ व्यवस्थाओं के लिए दिए निर्देश

गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा कदम

▸▸ बछड़ों के कास्ट्रेशन और कृत्रिम गर्भाधान पर होगा विशेष फोकस

गुना (निप्र)। जिले की गौशालाओं को अधिक व्यवस्थित, आत्मनिर्भर एवं उत्पादक बनाने की दिशा में कलेक्टर श्री किशोर कुमार कन्याल ने पहल करते हुए आज कुंभराज क्षेत्र के ग्राम सानई स्थित गौशाला का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने गौवंश के संरक्षण के साथ-साथ दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने के उपायों पर विशेष जोर दिया। कलेक्टर श्री कन्याल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गौशाला वैज्ञानिक पद्धति से कास्ट्रेशन (बधियाकरण) कराया जाए तथा

कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने कहा कि बेहतर नस्ल संवर्धन एवं उन्नत प्रबंधन से दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे गौशालाओं के संचालन को और अधिक सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर बनाया जा सकेगा।

निरीक्षण के दौरान गौशाला प्रबंधन द्वारा बरसात के मौसम में जलभराव एवं कीचड़ की समस्या से बचाव के लिए तीन शेड निर्माण की आवश्यकता बताई। इस पर कलेक्टर श्री कन्याल ने संबंधित अधिकारियों को कार्ययोजना तैयार कर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गौवंश के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना प्राथमिकता है।

गौशाला के समीप ही हरे चारे की पर्याप्त व्यवस्था

कलेक्टर ने गौशाला में उपलब्ध व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया। उन्होंने पाया कि गौशाला के समीप ही हरे चारे की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही भूसे एवं पेयजल की समुचित उपलब्धता सुनिश्चित की गई है, जिससे वर्षभर गौशाला का संचालन सुचारु रूप से किया जा रहा है। उन्होंने गौशाला प्रबंधन द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अभिषेक दुबे, एसडीएम चांचौड़ा श्री रवि मालवीय, तहसीलदार श्री कमल मण्डेलिया सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे

स्वच्छ गांव स्वच्छ जलवायु अभियान अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित

स्वच्छता साथियों को परिचय पत्र प्रदान किये

श्योपुर (निप्र)। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं के आयोजन के पूर्व स्वच्छ गांव, सुरक्षित जलवायु अभियान चलाया जा रहा है। इस दौरान सभी प्रतिभागियों को नियम, 2026 तथा इस विषय पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के प्रति जागरूक करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सीईओ जिला पंचायत श्रीमती सौम्या आनंद द्वारा जारी निर्देशो के परिपालन में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम लागू हो गये है जिसके अंतर्गत घर-घर कचरा संग्रहण, सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध, पुराने डंपिंग स्थलों की पहचान वृक्षारोपण-''एक पेड मां के नाम'' जल संरक्षण तथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिये निर्मित अधोसंरचनाओं का सत्यापन व क्रियाशीलता के लिये कार्य करेंगे। उक्त अभियान में समुदाय व जनप्रतिनिधियों की भागीदारी से ''मेरा गॉव-मेरी जिम्मेदारी'' की भी शपथ दिलाई जायेगी। उक्त निर्देशो के क्रम में विजयपुर विकासखण्ड की ग्राम पंचायत में अभियान के शुभारंभ दिन ''क्लाइमेंट एक्शन'' थीम पर मिशन लाइफ (लाइफस्टाइल फॉर इन्वायरमेंट) के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों में जन-जागरूकता एवं जन-भागीदारी को सुनिश्चित किये जाने के उद्देश्य से गतिविधियां आयोजित की गई। गतिविधियों के अंतर्गत घर-घर कचरा संग्रहण, प्लास्टिक कचरा प्रबंधन, संपूर्ण स्वच्छता एवं ओडीएफ प्लस मॉडल ग्रामों की अवधारणा के अनुरूप परिसंपत्तियों की स्वच्छता, उचित संचालन एवं रखरखाव को सुनिश्चित किये जाने हेतु समुदाय में व्यवहारगत स्थायित्व को मजबूत करने के लिए कार्य किये गये।

सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों को दें सघनता : राज्यपाल श्री पटेल

प्रत्येक मंगलवार को आंगनवाड़ी केन्द्र में सिकल सेल की जानकारी दें

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा की 19 जून को विश्व सिकल सेल दिवस है। उन्होंने लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और आयुष विभाग को विश्व सिकल सेल दिवस के तारतम्य में सिकल सेल उन्मूलन गतिविधियों को सघनता के साथ संचालित करने के निर्देश दिये है। उन्होने कहा कि स्क्रीनिंग, उपचार, कार्ड और दवा वितरण प्रयासों के साथ ही रोग की जागरूकता के कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने चाहिए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सिकल सेल उन्मूलन के संकल्प को पूरा करने तक हमें थकना और रूकना नहीं है। इसलिए उन्मूलन और उपचार की नियमितता की जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र में विशेष निगरानी की जाना जरूरी है। राज्यपाल श्री पटेल गुरुवार को लोक भवन में लोक स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और आयुष विभाग के साथ चर्चा कर रहे थे। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल और आयुष मंत्री श्री इंदर सिंह परमार भी मौजूद थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने प्रत्येक मंगलवार को आंगनवाड़ी केन्द्र में माता और बच्चों को सिकल सेल एनीमिया के कारण, लक्षण और उपचार से संबंधित जानकारी प्रदान करने के निर्देश दिये है। उन्होंने स्वास्थ्य और आयुष विभाग के सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों पर जिलेवार चर्चा की। राज्यपाल श्री पटेल को स्वास्थ्य विभाग द्वारा सिकल सेल स्क्रीनिंग, दवा और कार्ड वितरण आदि की विस्तार से जिलेवार जानकारी दी गई। आयुष विभाग द्वारा भी जिलेवार दवाई वितरण, परामर्श, उपचार और रोगियों से सतत संवाद के द्वारा उपचार गतिविधियों की जानकारी दी गई। राज्यपाल श्री पटेल ने आयुष विभाग को सिकल सेल उपचार प्रयासों का रोगियों से फीडबैक प्राप्त करने के निर्देश दिए।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि राज्य सरकार, सिकल सेल उन्मूलन के लिए संकल्पित है। मध्यप्रदेश सिकल सेल उन्मूलन के राष्ट्रीय स्तर के प्रयासों में अग्रणी है। यह संबंधित विभागों द्वारा सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों की सही दिशा में सार्थक कार्यों का परिणाम है। उन्होंने स्वास्थ्य और आयुष विभाग के सिकल सेल उन्मूलन कार्यों और गतिविधियों की सराहना की। सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों से जुड़े सभी वरिष्ठ अधिकारियों सहित मैदानी अमले को बधाई दी। राज्यपाल को अपर मुख्य सचिव श्री अशोक कुमार बर्णवाल ने विश्व सिकल सेल दिवस पर खंडवा जिले में प्रस्तावित कार्यक्रम के संबंध में अवगत कराया।

बैठक में जनजातीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री दीपक खांडेकर, राज्यपाल के प्रमुख सचिव डॉ. नवनीत मोहन कोठारी, आयुष विभाग के प्रमुख सचिव श्री शोभित जैन, जनजातीय प्रकोष्ठ की सचिव श्रीमती मीनाक्षी सिंह, लोक स्वास्थ्य परिवार कल्याण एवं आयुष विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और लोक भवन के अधिकारी मौजूद थे।

निगम बिल्डिंग की लिफ्ट में फंसी महिला

सेकंड फ्लोर पर 20 मिनट तक फंसी रही, ऑटो रेस्क्यू-बैकअप सिस्टम नहीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के लिंक रोड नंबर-2 स्थित नगर निगम की बिल्डिंग के सेकंड फ्लोर पर एक महिला लिफ्ट में फंस गई। करीब 20 मिनट तक महिला फंसी रही। जिसे निकालने में खासी मशक्कत करना पड़ी। लिफ्ट में ऑटो रेस्क्यू या बैकअप सिस्टम नहीं होने से स्थिति गंभीर हो गई। महिला जैसे ही लिफ्ट में घुसी, बिजली गुल हो गई थी।

मामला बुधवार शाम का है। 6 मई को इस बिल्डिंग का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लोकार्पण किया था। 73 करोड़ रुपए की लागत से बनी बिल्डिंग में लिफ्ट लगाई गई है। महिला कर्मचारी ग्राउंड फ्लोर से तीसरी मंजिल पर जाने के लिए लिफ्ट में सवार हुई थीं।

इसी दौरान बिजली चली गई और लिफ्ट बीच रास्ते में अटक गई। कर्मचारी के फंसने की जानकारी मिलते ही मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। कुछ लोगों ने तकनीकी टीम के पहुंचने से पहले ही लिफ्ट का दरवाजा खोलने का प्रयास शुरू कर दिया।

लोगों ने गेट खोलने की कोशिश की

नगर निगम की बिजली शाखा के कार्यपालन यंत्री आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि जब तकनीकी टीम मौके पर पहुंची, तब कुछ लोग चाबी और पेचकस की मदद से लिफ्ट का गेट खोलने का प्रयास कर रहे थे। टीम ने उन्हें रोका और लिफ्ट सिस्टम को रीसेट किया।इसके बाद लगभग 10 मिनट में महिला कर्मचारी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। बाहर आने के बाद वह काफी घबराई हुई दिखाई दीं।

सुरक्षा इंतजामों पर उठे सवाल

अधिकारियों के मुताबिक लिफ्ट में कोई तकनीकी खराबी नहीं थी, लेकिन बिजली बंद होने के कारण वह रुक गई थी। घटना के बाद करोड़ों रुपए की लागत से बने नए निगम मुख्यालय की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं।कर्मचारियों और नागरिकों का कहना है कि जब भवन में प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग आते हैं, तो लिफ्ट में ऑटो बैकअप या ऑटो रेस्क्यू सिस्टम जैसी जरूरी सुविधाएं होना चाहिए थीं।

16 जून से 15 अगस्त तक मत्स्याखेट पर प्रतिबंध, नदियों से असंबद्ध छोटे तालाबों को छूट

नदियों और उससे जुड़े जलाशयों में मछली पकड़ने पर रोक, उल्लंघन पर होगी कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मछलियों के प्राकृतिक प्रजनन को बढ़ावा देने और जलीय पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए 16 जून से 15 अगस्त 2026 तक की अवधि को बंद ऋतु (क्लोज सीजन) घोषित किया गया है। इन दो महीने की अवधि में प्रदेश की समस्त नदियों और उनसे जुड़े जलाशयों में मत्स्याखेट पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। गुरुवार को संचालनालय मत्स्योद्योग ने इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इस अवधि में यदि कोई भी व्यक्ति नियमों का उल्लंघन कर अवैध रूप से मत्स्याखेट या परिवहन करते हुए पाया जाता है, तो उसके विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

प्रतिबंध से ऐसे छोटे तालाब या अन्य जल स्रोत जिनका किसी भी नदी से कोई संबंध नहीं है और जिन्हें निर्दिष्ट जल की परिभाषा के अंतर्गत नहीं लाया गया है, उन पर यह नियम लागू नहीं होंगे। इन निजी या स्थानीय छोटे तालाबों में सामान्य दिनों की तरह मत्स्य पालन और आखेट किया जा सकेगा। मछुआ समुदाय को समय रहते जानकारी मिलने से मछुआरे अनजाने में होने वाली किसी भी परेशानी से बच सकेंगे और नियमों का पालन कर प्राकृतिक रूप से मत्स्य बीज उत्पादन में सहयोग कर सकेंगे।

मप्र में शिक्षकों व कर्मचारियों के स्थानांतरण आवेदन 3 से 8 जून तक

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन की स्थानांतरण नीति 2026-27 के तहत जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति कल्याण विभाग ने स्थानांतरण आवेदनों के संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं। आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार स्वैच्छिक स्थानांतरण के आवेदन 3 जून से 8 जून तक ट्र-॥ररूस पोर्टल पर ऑनलाइन स्वीकार किए जाएंगे। आवेदक स्थानांतरण के लिए अधिकतम 15 कार्यालयों/संस्थाओं का चयन कर सकेंगे। आवेदन में दर्शाए गए कारणों के समर्थन में आवश्यक दस्तावेज पीडीएफ स्वरूप में अपलोड करना अनिवार्य होगा, जिनका आकार अधिकतम 2 एमबी निर्धारित किया गया है। एक बार आवेदन सबमिट होने के बाद उसमें किसी प्रकार का संशोधन नहीं किया जा सकेगा। विभाग ने यह स्पष्ट किया है कि आवेदन में गलत जानकारी देने या सत्यापन में अनियमितता पाए जाने पर संबंधित कर्मचारी एवं सत्यापन अधिकारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। पोर्टल पर प्रदर्शित रिक्तियां अस्थायी (टेंटेटिव) होंगी और समय-समय पर अपडेट की जा सकेंगी। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षकों के स्थानांतरण केवल उनके विषय की रिक्तियों पर ही किए जाएंगे। वहीं प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक संवर्ग के प्रशासनिक एवं स्वैच्छिक स्थानांतरण परिवीक्षा अवधि के दौरान नहीं किए जाएंगे। जिला अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे 5 जून 2026 तक ई-एचआरएमएस पोर्टल पर सभी रिक्त पदों की सही जानकारी दर्ज एवं सत्यापित करें। रिक्तियों की एंट्री और सत्यापन की जिम्मेदारी संबंधित कार्यालय प्रमुख, डीडीओ एवं ऑफिस एडमिन की होगी। केवल ऑनलाइन आवेदन करने मात्र से स्थानांतरण का अधिकार सुनिश्चित नहीं होगा। आवेदनों को स्वीकार या अस्वीकार करने का अंतिम निर्णय मुख्यालय स्तर पर लिया जाएगा और इस संबंध में शासन का निर्णय अंतिम माना जाएगा। यह आदेश प्रदेश के जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति कल्याण विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शिक्षकों पर लागू होगा।

नगरीय निकायों एवं पंचायतों की मतदाता सूची में नाम जोड़ने- काटने के लिये पहली बार ऑनलाइन आवेदन की सुविधा

भोपाल (नप्र)। राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री मनोज श्रीवास्तव ने बताया है कि प्रदेश में पहली बार नगरीय निकायों एवं त्रि-स्तरीय पंचायतों की फोटोयुक्त मतदाता सूची के पुनरीक्षण के दौरान मतदाताओं को नाम जोड़ने, कटवाने और नाम संशोधन के लिये ऑनलाइन सुविधा दी गयी। इस सुविधा का लाभ लेते हुए कुल 8317 आवेदकों ने ऑनलाइन आवेदन किया। इनमें से नगरीय निकायों में 1496 और पंचायतों में 6848 ऑनलाइन आवेदन प्राप्त हुए। नगरीय निकायों में 675 ऑनलाइन आवेदन नाम जोड़ने, 770 नाम कटवाने और 24 आवेदन नाम में संशोधन के लिये प्राप्त हुए हैं। वहीं त्रि-स्तरीय पंचायतों में 1701 आवेदन नाम जुड़वाने, 4960 नाम कटवाने और 187 आवेदन नाम में संशोधन के लिये प्राप्त हुए हैं।

वंदे मातरम् विवाद में कांग्रेस पार्षद की अग्रिम जमानत याचिका ख़ारिज

न्यायालय ने कहा, कानून के अनुसार ही होगी आगे की कार्रवाई

इंदौर। राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' नहीं गाने और उससे जुड़े विवादित बयान के मामले में कांग्रेस पार्षद फौजिया शेख अलीम को बड़ा कानूनी झटका लगा। इंदौर जिला एवं सत्र न्यायालय ने उनकी अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी। मामले की सुनवाई के दौरान दोनों पक्षों की ओर से विस्तृत बहस हुई, जिसके बाद न्यायालय ने यह आदेश पारित किया।

लोक अभियोजन अभिजीत सिंह राठौर ने बताया कि फौजिया शेख अलीम ने 3 जून को अग्रिम जमानत याचिका प्रस्तुत की थी। सुनवाई के दौरान उनके पक्ष में तर्क दिया गया कि वे पिछले 20 वर्षों से जनप्रतिनिधि हैं, कांग्रेस की सक्रिय सदस्य हैं तथा एलएलबी की छात्रा भी हैं। वहीं अभियोजन पक्ष ने न्यायालय के समक्ष एक पेन ड्राइव प्रस्तुत की, जिसमें पार्षद का कथित बयान होने का दावा किया गया। अभियोजन के अनुसार उक्त बयान में वंदे मातरम गाने को लेकर धार्मिक आधार पर आपत्ति जताई गई थी, जिसे मामले का महत्वपूर्ण साक्ष्य माना गया। न्यायालय ने याचिका निरस्त करते हुए यह भी स्पष्ट किया कि प्रकरण सात वर्ष से कम सजा वाले अपराध की श्रेणी में आता है। ऐसे में पुलिस को विधि सम्मत प्रक्रिया का पालन करते हुए ही आगे की कार्रवाई करनी होगी।

ये था मामला

इंदौर नगर निगम के परिषद सम्मेलन के दौरान कांग्रेस पार्षद फौजिया शेख अलीम और रुबीना इकबाल द्वारा राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' नहीं गाने का मामला सामने आया था। इसके बाद यह मुद्दा राजनीतिक और सामाजिक बहस का केंद्र बन गया। मामले को लेकर एमजी रोड थाने में दोनों पार्षदों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया था। अब अग्रिम जमानत याचिका खारिज होने के बाद इस प्रकरण की आगामी कानूनी प्रक्रिया पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं।

मुख्यमंत्री से वर्ष 2026 के लिए पुरातत्व विज्ञान क्षेत्र में पद्मश्री से सम्मानित डॉ. नारायण व्यास ने सौजन्य भेंट की।

मुख्यमंत्री ने उज्जैन की प्रतिभाशाली बेटी दीक्षा को दी बधाई

दीक्षा ने चने की दाल के 12 दानों पर 12 ज्योतिर्लिंगों की पेन्टिंग कर बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन की प्रतिभाशाली बेटी सुश्री दीक्षा की कला को वर्ल्ड वाइड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान मिलने पर बधाई दी है। सुश्री दीक्षा ने केवल 22 मिनट में 8 मिमी आकार की चने की दाल के 12 दानों पर 12 ज्योतिर्लिंगों की पेंटिंग बनाकर असाधारण कला का प्रदर्शन कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उसे उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सुश्री दीक्षा ने अपनी प्रतिभा से देश और प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। वर्ल्ड वाइड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल होकर दीक्षा ने एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल कर ली है।

'मां आपने मेरी जान ले ही ली'

ख्याति जैन की मौत के बाद भी रहस्यमयी है ये मैसेज, मौत से पहले तीन घंटे तक रहा था बॉयफ्रेंड

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के अशोका गार्डन थाना क्षेत्र में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही 18 वर्षीय छात्रा ख्याति जैन की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई थी। अब इस मौत को लेकर कई सवाल खड़े हो रहे हैं। उसके अकाउंट से मां को आए मैसेज ने मामले को रहस्यमयी बना दिया है। मां को आशंका है कि उसकी हत्या हुई है। वहीं, पुलिस आत्महत्या के एंगल पर जांच कर रही है।

अब तक नहीं हुई है एफआईआर- घटना को 24 दिन बीत जाने के बाद भी अब तक एफआईआर दर्ज नहीं होने से परिवार में नाराजगी है। जानकारी के मुताबिक ख्याति जैन प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही थी। 11 मई 2026 को उसकी संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी।

परिजनों का आरोप है कि मौत से पहले के आखिरी तीन घंटे ख्याति अपने बॉयफ्रेंड के साथ थी। इसी वजह से परिवार लगातार इस मामले में गहराई से जांच की मांग कर रहा है। परिवार का कहना है कि ख्याति के मोबाइल से कुछ ऐसे मैसेज मिले हैं, जिन्होंने पूरे मामले को और अधिक रहस्यमय बना दिया है। एक मैसेज में कथित तौर पर लिखा था कि मां आपने मेरी जान ले ही ली। इस संदेश के बाद परिवार का दावा है कि मामला सामान्य आत्महत्या का नहीं हो सकता और इसमें मानसिक दबाव, ब्लैकमेलिंग या किसी साजिश की भी जांच होनी चाहिए।

कई अहम सबूत हो सकते हैं खत्म

परिवार का कहना है कि यदि शुरुआती स्तर पर सही तरीके से जांच नहीं हुई तो कई अहम सबूत खत्म हो सकते हैं। सूत्रों के मुताबिक पुलिस को घटनास्थल और मोबाइल चैट से कुछ अहम जानकारियां मिली हैं, लेकिन पुलिस अधिकारी फिलहाल खुलकर कुछ भी कहने से बच रहे हैं। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट, कॉल डिटेल और डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर जांच आगे बढ़ाई जा रही है।

स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्य समय-सीमा में गुणवत्ता के साथ पूरे किए जाएँ : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्यों की वृहद समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण किए जाएँ एवं उनकी सतत मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि निर्माण कार्यों के साथ-साथ फर्नीचर, उपकरण एवं मानव संसाधन (एचआर) की समय पर व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए, ताकि स्वास्थ्य संस्थानों में शीघ्र स्वास्थ्य सेवाओं का प्रदाय प्रारंभ किया जा सके। उन्होंने ऐसे कार्यों के प्रस्ताव, जिनमें कार्यस्थल के अनुसार परिवर्तन अथवा कार्य में वृद्धि की आवश्यकता है, शीघ्र अग्रेषित करने के निर्देश दिए और कहा कि उनकी स्वीकृति के लिए प्राथमिकता से कार्यवाही की जाए।

आयुक्त लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री धनराजू एस ने बताया कि स्वास्थ्य संस्थानों के निर्माण के साथ ही फर्नीचर, उपकरणों एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं तथा मैनपावर की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जा रही है, जिससे संस्थानों के संचालन में किसी प्रकार की विलंब की स्थिति न बने। बैठक में बताया गया कि पीआईयू द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी), प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी), बीपीएचयू, सीसीएचबी, औषधालय सहित अन्य स्वास्थ्य संस्थानों के कुल 137 निर्माण कार्य वर्ष 2026-27 में किए जा रहे हैं। इनमें से 45 स्वास्थ्य संस्थानों के निर्माण कार्य पूर्ण हो चुके हैं। जून माह के अंत तक 7 अतिरिक्त स्वास्थ्य संस्थानों का कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा। द्वितीय तिमाही में 28, तृतीय तिमाही में 33 तथा वित्तीय वर्ष के अंत तक 13 स्वास्थ्य संस्थानों के निर्माण कार्य पूर्ण होने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बैठक में पीआईयू के अधिकारी उपस्थित थे।

प्रेमी के साथ घर छोड़कर गई तलाकशुदा बेटी

पिता ने बेटों के साथ मिलकर गला दबाकर हत्या कर दी

ग्वालियर (नप्र)। मध्य प्रदेश ग्वालियर में एक ऑनर किलिंग का मामला सामने आया है। एक पिता ने बेटों के साथ मिलकर अपनी तलाकशुदा बेटी की गला दबाकर हत्या कर दी है। इसके बाद शव का अंतिम संस्कार कर दिया है। फिर उसकी अस्थियों को जमीन में दफना दिया। मामला सामने आते ही हड़कंप मच गया है।

डबरा इलाके की है घटना- दिल दहला देने वाली यह घटना ग्वालियर के डबरा इलाके से निकलकर सामने आई है। जानकारी के अनुसार डबरा के लखिया गांव की रहने वाली जूली गुर्जर तलाकशुदा थी और वह अपने मायके में रह रही थी। मई के महीने में जूली गुर्जर घर से गायब हो गई थी। परिजनों ने उसकी गुमशुदी थाने में दर्ज कराई गई थी। 7 मई में को पुलिस ने जूली गुर्जर को दस्तयाब किया था और उसे परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया था।

मुरैना निवासी रोहित गुर्जर के साथ थे संबंध- बताया गया है कि जूली गुर्जर के मुरैना निवासी रोहित गुर्जर के साथ संबंध थे। वह रोहित गुर्जर के साथ ही घर से चली गई थी। यह बात जूली के पिता मंगेश को नागवार गुजरी। इसलिए उन्होंने बेटी के घर वापस लौटने पर अपने बेटे दीपू, छिद्दा एवं अन्य परिजनों के साथ मिलकर अपनी तलाकशुदा बेटी जूली गुर्जर का गला दबाकर हत्या कर दी।

शव को जलाकर अस्थियों को जमीन में दफना दिया- परिवार के लोग खेत में उसके शव को ले गए। साथ ही खेत के किनारे उसके शव को जला दिया और उसकी अस्थियों को जमीन में दफना दिया था। बुधवार की रात को पुलिस को जानकारी मिली थी कि जिस महिला को पुलिस ने दस्तयाब किया था, वह दिखाई नहीं दे रही है।

प्रेमी के साथ भागने की वजह से नाराज थे परिजन- ग्वालियर पुलिस ने इस मामले में जांच की और पिता को हिरासत में लिया। पिता ने बताया कि उसने बेटी की गला दबाकर हत्या कर दी है। फिलहाल पुलिस इस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है। साथ ही खेत से अस्थी को बरामद कर दिया।